

3  
7

~~a-9~~ a-9 **Pl. 297**

1. 00  
2. 00  
3. 00 20

Hist.  
III. F. 3.

Th. hist. S. Pl. III, 392.

Barthélémy 1741.



Ouvrages contenus dans ce Volume.

I. Relandi de Spoliis Tempoli Hierosolymitanus, in Arcu Titano Romæ conspicuus.

II. Isaaci de Beausobre, de Novi Testamens Libris Apocryphis Dissertation.

III. Considerations, ou Raisonnement clair & solide sur trois d'entre les principaux points en dispute de l'Ecriture Sainte.

ISAACI DE BEAVSOBRE

V. C.

DE

NOVI FOEDERIS

**LIBRIS APOCRYPHIS**  
**DISSERTATIO**

LATINAM E GALICA FECIT

ET

SVMME REVERENDO  
AMPLISSIMO AC DOCTISSIMO  
VIRO

**SIGISMVNDO IACOBO  
BAVMGARTEN**

DEMANDATVM IPSI HAVD ITA  
PRIDEM SACRAS LITTERAS DO  
CENDI PUBLICE IN HALEN  
SI ACADEMIA MVNVS  
GRATVLATVRVS  
NVNCVPAVIT

**FRIDER GVIEL ROLOFFIVS**

BEROLINAS

*BEROLINI*

APVD CHRISTOPH GOTTL NICOLAI

1733

1  
2  
3  
4  
5  
6  
7  
8  
9  
10  
11  
12  
13  
14  
15  
16  
17  
18  
19  
20  
21  
22  
23  
24  
25  
26  
27  
28  
29  
30  
31  
32  
33  
34  
35  
36  
37  
38  
39  
40  
41  
42  
43  
44  
45  
46  
47  
48  
49  
50  
51  
52  
53  
54  
55  
56  
57  
58  
59  
60  
61  
62  
63  
64  
65  
66  
67  
68  
69  
70  
71  
72  
73  
74  
75  
76  
77  
78  
79  
80  
81  
82  
83  
84  
85  
86  
87  
88  
89  
90  
91  
92  
93  
94  
95  
96  
97  
98  
99  
100  
101  
102  
103  
104  
105  
106  
107  
108  
109  
110  
111  
112  
113  
114  
115  
116  
117  
118  
119  
120  
121  
122  
123  
124  
125  
126  
127  
128  
129  
130  
131  
132  
133  
134  
135  
136  
137  
138  
139  
140  
141  
142  
143  
144  
145  
146  
147  
148  
149  
150  
151  
152  
153  
154  
155  
156  
157  
158  
159  
160  
161  
162  
163  
164  
165  
166  
167  
168  
169  
170  
171  
172  
173  
174  
175  
176  
177  
178  
179  
180  
181  
182  
183  
184  
185  
186  
187  
188  
189  
190  
191  
192  
193  
194  
195  
196  
197  
198  
199  
200  
201  
202  
203  
204  
205  
206  
207  
208  
209  
210  
211  
212  
213  
214  
215  
216  
217  
218  
219  
220  
221  
222  
223  
224  
225  
226  
227  
228  
229  
230  
231  
232  
233  
234  
235  
236  
237  
238  
239  
240  
241  
242  
243  
244  
245  
246  
247  
248  
249  
250  
251  
252  
253  
254  
255  
256  
257  
258  
259  
260  
261  
262  
263  
264  
265  
266  
267  
268  
269  
270  
271  
272  
273  
274  
275  
276  
277  
278  
279  
280  
281  
282  
283  
284  
285  
286  
287  
288  
289  
290  
291  
292  
293  
294  
295  
296  
297  
298  
299  
300  
301  
302  
303  
304  
305  
306  
307  
308  
309  
310  
311  
312  
313  
314  
315  
316  
317  
318  
319  
320  
321  
322  
323  
324  
325  
326  
327  
328  
329  
330  
331  
332  
333  
334  
335  
336  
337  
338  
339  
340  
341  
342  
343  
344  
345  
346  
347  
348  
349  
350  
351  
352  
353  
354  
355  
356  
357  
358  
359  
360  
361  
362  
363  
364  
365  
366  
367  
368  
369  
370  
371  
372  
373  
374  
375  
376  
377  
378  
379  
380  
381  
382  
383  
384  
385  
386  
387  
388  
389  
390  
391  
392  
393  
394  
395  
396  
397  
398  
399  
400  
401  
402  
403  
404  
405  
406  
407  
408  
409  
410  
411  
412  
413  
414  
415  
416  
417  
418  
419  
420  
421  
422  
423  
424  
425  
426  
427  
428  
429  
430  
431  
432  
433  
434  
435  
436  
437  
438  
439  
440  
441  
442  
443  
444  
445  
446  
447  
448  
449  
450  
451  
452  
453  
454  
455  
456  
457  
458  
459  
460  
461  
462  
463  
464  
465  
466  
467  
468  
469  
470  
471  
472  
473  
474  
475  
476  
477  
478  
479  
480  
481  
482  
483  
484  
485  
486  
487  
488  
489  
490  
491  
492  
493  
494  
495  
496  
497  
498  
499  
500  
501  
502  
503  
504  
505  
506  
507  
508  
509  
510  
511  
512  
513  
514  
515  
516  
517  
518  
519  
520  
521  
522  
523  
524  
525  
526  
527  
528  
529  
530  
531  
532  
533  
534  
535  
536  
537  
538  
539  
540  
541  
542  
543  
544  
545  
546  
547  
548  
549  
550  
551  
552  
553  
554  
555  
556  
557  
558  
559  
550  
551  
552  
553  
554  
555  
556  
557  
558  
559  
560  
561  
562  
563  
564  
565  
566  
567  
568  
569  
560  
561  
562  
563  
564  
565  
566  
567  
568  
569  
570  
571  
572  
573  
574  
575  
576  
577  
578  
579  
580  
581  
582  
583  
584  
585  
586  
587  
588  
589  
590  
591  
592  
593  
594  
595  
596  
597  
598  
599  
590  
591  
592  
593  
594  
595  
596  
597  
598  
599  
600  
601  
602  
603  
604  
605  
606  
607  
608  
609  
600  
601  
602  
603  
604  
605  
606  
607  
608  
609  
610  
611  
612  
613  
614  
615  
616  
617  
618  
619  
610  
611  
612  
613  
614  
615  
616  
617  
618  
619  
620  
621  
622  
623  
624  
625  
626  
627  
628  
629  
620  
621  
622  
623  
624  
625  
626  
627  
628  
629  
630  
631  
632  
633  
634  
635  
636  
637  
638  
639  
630  
631  
632  
633  
634  
635  
636  
637  
638  
639  
640  
641  
642  
643  
644  
645  
646  
647  
648  
649  
640  
641  
642  
643  
644  
645  
646  
647  
648  
649  
650  
651  
652  
653  
654  
655  
656  
657  
658  
659  
650  
651  
652  
653  
654  
655  
656  
657  
658  
659  
660  
661  
662  
663  
664  
665  
666  
667  
668  
669  
660  
661  
662  
663  
664  
665  
666  
667  
668  
669  
670  
671  
672  
673  
674  
675  
676  
677  
678  
679  
670  
671  
672  
673  
674  
675  
676  
677  
678  
679  
680  
681  
682  
683  
684  
685  
686  
687  
688  
689  
680  
681  
682  
683  
684  
685  
686  
687  
688  
689  
690  
691  
692  
693  
694  
695  
696  
697  
698  
699  
690  
691  
692  
693  
694  
695  
696  
697  
698  
699  
700  
701  
702  
703  
704  
705  
706  
707  
708  
709  
700  
701  
702  
703  
704  
705  
706  
707  
708  
709  
710  
711  
712  
713  
714  
715  
716  
717  
718  
719  
710  
711  
712  
713  
714  
715  
716  
717  
718  
719  
720  
721  
722  
723  
724  
725  
726  
727  
728  
729  
720  
721  
722  
723  
724  
725  
726  
727  
728  
729  
730  
731  
732  
733  
734  
735  
736  
737  
738  
739  
730  
731  
732  
733  
734  
735  
736  
737  
738  
739  
740  
741  
742  
743  
744  
745  
746  
747  
748  
749  
740  
741  
742  
743  
744  
745  
746  
747  
748  
749  
750  
751  
752  
753  
754  
755  
756  
757  
758  
759  
750  
751  
752  
753  
754  
755  
756  
757  
758  
759  
760  
761  
762  
763  
764  
765  
766  
767  
768  
769  
760  
761  
762  
763  
764  
765  
766  
767  
768  
769  
770  
771  
772  
773  
774  
775  
776  
777  
778  
779  
770  
771  
772  
773  
774  
775  
776  
777  
778  
779  
780  
781  
782  
783  
784  
785  
786  
787  
788  
789  
780  
781  
782  
783  
784  
785  
786  
787  
788  
789  
790  
791  
792  
793  
794  
795  
796  
797  
798  
799  
790  
791  
792  
793  
794  
795  
796  
797  
798  
799  
800  
801  
802  
803  
804  
805  
806  
807  
808  
809  
800  
801  
802  
803  
804  
805  
806  
807  
808  
809  
810  
811  
812  
813  
814  
815  
816  
817  
818  
819  
810  
811  
812  
813  
814  
815  
816  
817  
818  
819  
820  
821  
822  
823  
824  
825  
826  
827  
828  
829  
820  
821  
822  
823  
824  
825  
826  
827  
828  
829  
830  
831  
832  
833  
834  
835  
836  
837  
838  
839  
830  
831  
832  
833  
834  
835  
836  
837  
838  
839  
840  
841  
842  
843  
844  
845  
846  
847  
848  
849  
840  
841  
842  
843  
844  
845  
846  
847  
848  
849  
850  
851  
852  
853  
854  
855  
856  
857  
858  
859  
850  
851  
852  
853  
854  
855  
856  
857  
858  
859  
860  
861  
862  
863  
864  
865  
866  
867  
868  
869  
860  
861  
862  
863  
864  
865  
866  
867  
868  
869  
870  
871  
872  
873  
874  
875  
876  
877  
878  
879  
870  
871  
872  
873  
874  
875  
876  
877  
878  
879  
880  
881  
882  
883  
884  
885  
886  
887  
888  
889  
880  
881  
882  
883  
884  
885  
886  
887  
888  
889  
890  
891  
892  
893  
894  
895  
896  
897  
898  
899  
890  
891  
892  
893  
894  
895  
896  
897  
898  
899  
900  
901  
902  
903  
904  
905  
906  
907  
908  
909  
900  
901  
902  
903  
904  
905  
906  
907  
908  
909  
910  
911  
912  
913  
914  
915  
916  
917  
918  
919  
910  
911  
912  
913  
914  
915  
916  
917  
918  
919  
920  
921  
922  
923  
924  
925  
926  
927  
928  
929  
920  
921  
922  
923  
924  
925  
926  
927  
928  
929  
930  
931  
932  
933  
934  
935  
936  
937  
938  
939  
930  
931  
932  
933  
934  
935  
936  
937  
938  
939  
940  
941  
942  
943  
944  
945  
946  
947  
948  
949  
940  
941  
942  
943  
944  
945  
946  
947  
948  
949  
950  
951  
952  
953  
954  
955  
956  
957  
958  
959  
950  
951  
952  
953  
954  
955  
956  
957  
958  
959  
960  
961  
962  
963  
964  
965  
966  
967  
968  
969  
960  
961  
962  
963  
964  
965  
966  
967  
968  
969  
970  
971  
972  
973  
974  
975  
976  
977  
978  
979  
970  
971  
972  
973  
974  
975  
976  
977  
978  
979  
980  
981  
982  
983  
984  
985  
986  
987  
988  
989  
980  
981  
982  
983  
984  
985  
986  
987  
988  
989  
990  
991  
992  
993  
994  
995  
996  
997  
998  
999  
990  
991  
992  
993  
994  
995  
996  
997  
998  
999  
SI  
IN  
S

SVMME· REVERENDO  
AMPLISSIMO· ET· DOCTISSIMO  
VIRO

SIGISMVND· IACOB·  
BAVMGARTEN

IN· FRIDERICIANA· ACADEMIA  
SACRARVM· LITTERARVM· PRO-  
FESSORI· PVBLICO· ORDI-  
NARIO

LIBELLVM· HVNC  
MEQVE· IPSVM· ADEO

D· D· D· D·



VIR  
SVMME· REVERENDE  
AMPLISSIME  
ET· DOCTISSIME  
PATRONE· OPTIME

**A**deo humanitatis,  
ac eruditionis, or-  
namentorumque  
ceterorum, quae  
in TE dudum suspexi prope  
singularia, cogitationem ab-  
sentis etiam, et a TVO latere  
diuulsi, pertentare subinde  
pectus, intelligo, ut, quanti  
facere illa soleam, premere  
silentio diutius non queam  
\* III                      Etsi

Etsi enim neque TV laudum  
TVARVM praecones admittis  
libenter, neque is ego sum,  
qui celebrare uirtutem TVAM,  
digna oratione, et idonea,  
possit: illud tamen adfirma-  
re, iure, uideor, quodam  
meo, TIBI, PATRONE OPTIME,  
in solidum, deberi, si quid in  
sacris litteris profeci, eo tem-  
pore, quo, in VESTRA acade-  
mia, contigit, concessso diui-  
nitus munere, uersari. Non  
commemorabo equidem,  
uerbis pluribus, hoc loco,  
quae TV mansuetiorum studi-  
orum, et sapientiae praefidia,  
ad exponendas sanctiores di-  
sciplinas, semper adtuleris,  
dili-

diligentia admirabili, et exemplo, nostra in primis hac aetate, sane quam inusitato Illud, quo minus dicam, a me non impetro, positis calculis, et comparata ea, quam tractandi haec sacra rationem tenes, uenisse mihi in mentem cogitare, eamdem si TE cum, diuina placita illu-strandi, uiam, aut, patrum no-strorum memoria, ingressi essent multi, aut iam uellent plures, (qui, ut sunt animo inuido, et alienae laudis ob-trectatores inepti, configenda, concionali clamore, contendunt omnia, ad quae ipsis, non dicam modo quibus de

\* IIII cauf.

caussis, adspirare non licet,) uix futurum nunc esse quidquam, quod in iis, qui declarandis sanctissimae fidei secretis operam insumunt, uel acerrimi, et uitio creati censores, iure, possint notare Quo animo quum essem, neque ingenio, quod satis scio, quam nullum mihi fere natura tribuerit, oppido fiderem, confirmauit me, non uiorum modo magnorum, qui in eadem se esse sententia ostenderent, iudicium; uerum REGIS etiam, illius, cuius admirabilem, omnibus in rebus, prudentiam nemo ingenio consequi, ne dicam efferre elo-

eloquendo potest, auctoritas,  
qui meritis unice TVIS id de-  
dit, ut diuina scita publice do-  
cendi munus, haud ita pri-  
dem, clementissime, TIBI de-  
cerneret. Quo sublato, no-  
uo ueluti, bene de academia,  
quam tantopere TV iam or-  
nas, et illustras signo, quem ad  
modum non laetari boni o-  
mnes non possunt: ita fre-  
mere, et indignari paucos, qui  
commodis suis nihil antiquius  
habent, non miramur magis,  
quam homines ad lumen cae-  
cutientes, et nihil rectum exi-  
stiantes, nisi, quod aut ipso-  
rum moribus conueniat, aut  
sexcenties ab aliis sit occenta-

\* V tum;

tum; ea contra, quae noua il-  
lis, utpote bonarum rerum fe-  
re ignaris, uidentur, despiciunt  
non modo habent; sed pro-  
sequenda odio esse, sibi per-  
suadent. (\*) Verum non ad-  
mouebo eorum uulneri digi-  
tum, quod neque hic locus  
patitur: neque, quoniam cum  
laude TVA esset coniunctum,  
per modestiam, quae ceteras  
dotes TVAS mirifice ornat, pu-  
to, licebit. Illud potius, cuius  
caussa publice hic TE com-  
pellare sustinui, nunc agam.  
Ex quo tempore, ad meos re-  
dii, ne traducerem ignobili o-  
tio tempus, exstigit mihi au-  
tor uir, mea laude maior, et  
omni-

l-  
e-  
ui  
D-  
r-  
d-  
i-  
is  
m  
n,  
as  
l-  
us  
n  
m  
e-  
D-  
t-  
i-  
omnibus doctis, et bonis, ob  
merita, quibus excellit, fer-  
me innumera, suspiciendus,  
MATVRINVS VEISSIERE LA  
CROZE, conuertendi Latine,  
quae Gallice, in musis ipsis  
non infitiando opere, Amste-  
laedami, hoc anno, forma  
quarta, prodiit, quo MANETIS,  
et Manichaeorum historiam,  
adcurate persequitur, de apo-  
cryphis libris, erat commen-  
tus ISAACVS DE BEAVSOBRE,  
V. S. R. Ego quum LA CRO-  
ZIO, in quo colendo pater-  
nam mihi constitui pietatem,  
et qui contra ita me, iam ab  
aliquot annis, quod praefisci-  
ne dixerim, amat, ut expe-  
ctari

ctari ab indulgentissimo patre  
maiora non possint, quam ab  
eo in me profecta sentio, ob-  
luctari nec uellem, nec pos-  
sem, dicto sum obediens. Ne-  
que tamen labori manum ad-  
moueram, quum designa-  
tum TE sanctioris disciplinae  
publicum doctorem, in Fri-  
dericana academia, summa  
cum animi uoluptate, audiui  
Cuius exstare publicum hoc  
documentum, apud TE pari-  
ter, et alios, uolui. Quod  
sinistre TE accepturum, si  
credere me dicam, quam id  
recte faciam, uiderint, qui  
norunt, qua me coram am-  
pletei humanitate, consueue-  
ris:

re  
ab  
b-  
os-  
e-  
d-  
ua-  
ae  
ri-  
na  
ui-  
oc  
ri-  
od  
si  
id  
ui  
m-  
ne-  
s:  
ris: sed certe mentiar. Viue,  
rebus optimis beatus omni-  
bus, VIR SVMME REVERENDE,  
et, quod diuinando uideor  
adsequi, bene erit Halensi aca-  
demiae, bene puriori coetui,  
bene etiam litterariae rei,  
quae limatulas scriptiones  
TVAS non potest non impa-  
tientissime desiderare. Va-  
le, meque amare ne desiste  
Berolini Ips. Cal. Quintil.  
cl<sup>o</sup>ccxxxviii

VIR

SVMME· REVERENDE  
AMPLISSIME· ET· DOCTISSIME  
PATRONE· OPTIME

SVMME· REVERENDI· NOMINIS· TVI

PERPETVVS· CVLTOR  
FRIDER· GVIL· ROLOFFIVS

(\*) Quod adposito CHREMES ille T  
RENTIANVS, ait, *uix dici quidquam, quod*  
*dictum prius non sit, si perspicere homi-*  
*nū illud genus, aut posset, aut uellet,*  
*nae, eo nomine, tam multa, quod non*  
*dū esse a quoquam ea prolata credat,*  
*reiicienda non putaret.* Imperfeciō-  
nem partis perfectius saepe totum effi-  
cere, (loquemur enim ita cum philoso-  
phis,) non demonstrauit modo, p̄rae-  
ter alios non nulos, uir magnus, et  
quem nemo paullo humanior ignorat,  
uerum et IAMBЛИCHVM, et antiquiores  
alios, secum docet sentire. Adgrega-  
ri se eorum numero, nec inuitus, patie-  
tur, VALENS ACIDALIVS, Germaniae no-  
straे futurum decus, si aut uita ipsi, qua  
dignus uidebatur, longior suppetiſſet,  
aut minus sibi, in emendandis dicam,  
an corrumpendis, antiquis scriptori-  
bus, indulſiſſet. Ita ille, *orat. de car.*  
*el. nat. epp. cent.* a CHRISTIANO fratre,  
Hanouiae clo lō c vi publicatae, sub-  
nexa, p. ccclxxxviii: *et si deformant,*  
*aliquando etiam naeuī, in formis eximis,*  
*deleant, quae deinceps pag. ccccxiii*  
*s. antiquorum testimoniis confirmat,*  
*et clarum, exemplis, facit.* Non  
inue-

inueniri res, adeo inter se similes,  
quin aliquo sunt modo diuersae, do-  
cuisse primus illustris LEIBNITIUS uide-  
tur. At uero, neque fugisse hoc pri-  
scorum sapientes aliquos, clarum fa-  
cit FABIVS *inst. or.* eo loco, quo, in  
aliam rem, usus iam est SCHEFFERVS,  
L. x. c. ii. editionis a uiro summo, PE-  
TRO BVRMANNO, cui tot, ac tanta lit-  
terae ornamenta debent, proditae,  
pag. lcccxxxiii: *Tantam enim diffi-  
cultatem habet similitudo, ut ne ipsa qui-  
dem natura in hoc ita eualuerit, ut non  
res, quae simillimae uideantur, discrimi-  
ne aliquo discernantur.* Quid? quod  
praestabilitae harmoniae uestigia, uel  
in M. TULLIO, at quanto uiro, uidean-  
tur offendi. Cuius loca indicauit mi-  
hi, qua est humanitate, aduersus ue-  
terem discipulum, uir eruditissimus,  
et semper mihi colendus, MAR. GEO.  
CHRISTGAVIVS. En ipsa CICERONIS  
uerba, *de officiis* L. III. c. XVIII. ed.  
GRAEVIANAE p. CCCXXXIII: *At uero  
si quis uoluerit animi sui complicatam no-  
tionem euoluere, iam se ipse doceat, eum  
uirum bonum esse, qui profit quibus possit,  
noceat nemini, nisi lacestitus iniuria, et*

C. XX

c. xx. pag. ccclxxxviii. *Explica, atque excute intelligentiam tuam, ut uideas, quae sit in ea species, forma, et notio uiri boni. Cadit ergo in uirum bonum mentiri, emolumenti sui caussa, criminari, praeripere, fallere? nihil profecto minus Sed quis modus esset huius obseruationis futurus, si cogere huc omnia institueremus, quae boni libri, in rem praesentem, magna copia, suppeditarent.* Vellemus curiosius eos aliquantum inspexisset, et diligentia maiori, homo, qui declarandum sibi sumferat nuper, nihil esse in magni cuiusdam uiri scriptis, quae tanta hodie contentione euolui uidemus, rerum reconditionum; aut non saepius propositarum. Neque enim tum meras nobis offusisset nugas, et compilations tantum dedisset, aut adulisset quedam, nondum a uiro docto, quem, infelici omine, confutatum ibat, occupata. Verum illum sibi quidem relinquimus, ne quae siisse laureolam, in mustaceo, uideamus

\*\*\*      \*\*\*      \*\*\*

DICEN-



## DICENDORVM SVMMA.

\*

\* \*

I

**D**issertationis institutae redditæ causa  
II. ISAACI OROBII DE CASTRO,  
iudæi, aduersus Euangelia, argumentum  
III. Ad iudæi hanc orationem adnota-  
tiones quaedam. Falsiuscatur homo, et  
erroris conuincitur. Contradictiones ad.  
parentes, ut uera esse Euangelia non possint, neutiquam  
efficiunt

IV. Respondetur iudæi arguento. Ad confutan-  
dum illud theses adlatae quinque

V. Prima thesis. Signa quaedam, et notæ, ex qui-  
bus fieri iudicium, à sanctis patribus, potuit, essentne  
libri autoritatis certae, an hypobolimæi

I. Regula prima. Quæ scripta erant, ea oportebat  
doctrinae illi, quæ coram proposita fuerat, exakte  
congruere. Non sequitur inde, ut traditio fidei  
norma debeat haberi

A

II. Re-

N°

## II

## DICENDORVM SVMMA

**II.** Regula secunda. *Libri euicta àbūrtia, antiquis-  
simis temporibus, non censemebatur, nisi constanti,  
et perpetuo uniuersae ecclesiae testimonio illa con-  
firmaretur*

**III.** Regula tertia. *De libris aut dubiis, aut spu-  
riis iudicium siebat, componendo eos cum libris  
certae auctoritatis*

**VI. SIMONII in Reformatos Franciae cauillationi-  
bus obuiam itur**

*Capita duo, facti unum, fidei alterum. In fidei,  
non facti capitibus Reformati S. Spiritus testimonio ni-  
tuntur, uideturque absurdum, fidei capita, ecclesiae testi-  
monio, uelle firmare*

*Exemplum ex Alcorano. Verba S. AVGVSTINI:  
ego uero non crederem Euangelio, nisi ecclesiae me  
moueret auctoritas, exposita*

*Fanaticam sententiam, Reformatis per SIMONI-  
VM obiectam, amplecti pontificii dicuntur*

**VII. Secunda thesis.** *Quam circumspete, et  
qua religione, SS. patres, in iudicandis libris, uersaren-  
tur. Tres librorum ordines: Verorum unus, dubiorum  
secundus, falorum, et suppositiorum tertius*

**VIII. Rei exemplum,** *in examinata, et diiudicata  
apocalypsi*

**VIII. Tertia thesis.** *Librorum apocryphorum  
origo, et caussae*

*Per ecclesiae christianaee naturam, fieri non poterat  
ut tales non essent. SIMONII obseruatio. S. IGNATII  
locus male redditus. Ille paraphrasi declaratus. S.  
IGNA-*

**IGNATIVS** de quibus haereticis loquatur, et quaenam illi Euangelii uerba in dubium uocarint

*Euangelium Nazaraeorum testimonio confirmatum*

**X.** Quarta thesis. *Libri apocryphi numero pauciores multo sunt, quam credi solet. Unius Euangelii appellations uariae*

*SS. patres libros haereticorum, quibus illud non conueniebat adeo, Euangelia nuncupant*

**XI.** *Apocryphorum librorum, qui re uera diuersi sunt, ordines duo, et temporis ratione, et pro iis, quae istis continentur*

**I.** Ordo. *Euangelium secundum Ebraeos. Apostolorum aetatem attingit, ab haereſeoſ ſuſpicione eſt liberum. Letta inibi de adultera hiftoria*

*Euangelium secundum Aegyptios, aetatis eiusdem Nulli haereſi fauet. Ab Eſſenis ſcriptum uidetur. Euangelia alia, neque frugis malae, neque ab haereticis efficiata. Praedicatio ſive doctrina S. PETRI*

**II.** Ordo librorum apocryphorum. *Quo tempore prodierint. Suppositios eſſe, et aetas probat, et scribendi genus obſcurum*

*Exemplo res probatur falsi S. PETRI Euangelii, coetibus orthodoxis ignoti*

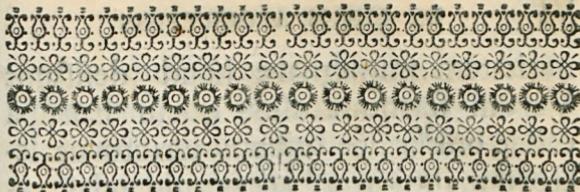
**XII.** Quinta thesis. *Apocrypha, ad conſirmandam IESV CHRISTI diuinam autoritatem, faciunt pariter, ac reliqui libri, eum filium DEI eſſe docent, et miraculis fuisse inſignem, conſirmant*

### III DICENDORVM SVMMA

- I. *Testimonium ecclesiae christianaæ, e iudeis collectæ,*  
*de suo Euangelio*
- II. *Christianorum in Aegypto hominum, deque eorum*  
*Euangelio*
- III. *Falsorum, quae supersunt, euangeliorum*
- III. *Sectarum antiquissimarum, Ebionitarum nimi-*  
*rum, et Docetarum*
- V. *MARCIIONIS Euangelii*
- XIII. *Quibus rebus a veris, Euangelia apocrypha di-*  
*screparent*
- XIV. *Dissertationis peroratio. Libri suppositiit sacerdotum noui foederis librorum auctoritatem non destru-*  
*unt. Charakteres indubii sex, quibus a suppositiis di-*  
*scerni certae auctoritatis libri possunt*
- XV. *Occurritur dubio: Ecclesiam scilicet in librorum*  
*certorum numerum recepisse eos, qui antiquissimis tempo-*  
*ribus, in dubiorum librorum ordinem referebantur*



De



DE  
LIBRIS APOCRYPHIS  
DISSERTATIO

---

---



I

**E**I in eruditorum hominum  
gratiam commentarer,  
non abrumperem differentiationis seriem, ad reuo-  
candum sub examen, con-  
futandumque argumentum, quo a fan-  
ctissima fide alieni homines noui foede-  
ris librorum *ἀνθετίαν*, et exploratam  
A. III ueri-

ueritatem impugnare haud desistunt  
Verum sermone usus, quem Europa  
callet omnis, et utilitati seruiturus le-  
ctorum, qui otio, ad peruidendas re-  
ligionis disceptationes, minime abun-  
dant, occurrentum offendioni uideba-  
tur, quam parere apocryphorum, de  
qua differuimus, multitudo posset. Ac-  
cedunt caussae praeter ea aliae, repre-  
mendi fidei nostrae aduersariorum tri-  
umphos, ostendendique, si ad uiuum  
refecari res debeat, apocrypha isthaec  
omnia ueritatem, aduersus quam illi se  
efferunt, confirmare. Quod quum fa-  
etorum me sim pollicitus, nunc, ut per-  
ficiatur, operam dabo. Prodeat in sce-  
nam iudeus tantummodo, neque in-  
genio destitutus ille, neque eruditione  
non instructus. Liceat ipsi impugnare  
religionem, quam suae inaedificatam  
ruinis sibi persuadet, et ignosci faci-  
lius illi, quod minoris res uideatur peri-  
culi, poterit, quam perfugarum quo-  
rumdam scrupulis, qui, nulla de causâ  
aliam,

---

*pollicitus] Historiae MANETIS, et Manichaeismi cri-  
ticas pag. CCCLXX. Nota III.*

alia, in christianorum hominum coetu latent, nisi, ut, illius tuti praesidio, ad euentura, quibus ea nititur, fundamenta, machinas queant omnes adhibere

## II

ISAACVS OROBIO DE CASTRO,  
iudeus, in disputatione illa, quae cum doctissimo LIMBORCHIO ipsi intercessit, ementita, et hypobolimaea euangelia, prioribus saeculis, scripta obiiciebat  
Ita ille: *Fuerunt quidem plurima, praeter quatuor euangelia, quorum aliqua refert HIERONYMVS, et alii patres, quae diuersarum haeresium fuere principia, ut ad Aegyptios, ad Ebraeos, THOMAE, BARTHOLOMAEI, duodecim apostolorum, BASILIDIS, HARPOCRAE, et alia, quae referre foret superfluum, quorum singula suos fautores habuere, diuersisque contentionibus occasionem dedere.* Haec omnia euangelia, inter se, de rei ueritate, contendentia, tem-

A. III

poris

---

*Ita ille ] uideatur amica collatio cum erudito iudeo, de ueritate religionis christiana, scripto tertio iudari, quaesito quarto, numero octavo, pag. CXXXXV*

## VIII

## DE LIBRIS APOCRYPHIS

poris tractu, et conciliorum auctoritate, reie-  
cta fuere, quatuor duntaxat, in Europa, ad-  
missis, utpote inter se magis conformibus  
Sed non a toto christianismo explosa fuere,  
quia a THOMA conscriptum in plurimis  
Africae, et Asiae ecclesiis perseverat, ut unica  
suae fidei regula: quod et ego uidi, et  
Latine mihi interpretabatur archiepiscopus,  
nescio cuius Armeniae ciuitatis, qui Romae  
Latinitatem didicerat, cum quo, per aliquot  
menses, in hac ciuitate, consuetudinem ha-  
bui, et uere testor, me tot errores, supersti-  
tiones, et haeretica dogmata ibi legisse, ut  
ualde mirarer, euangelii nomine insigniri  
Quod ipse constanter affirmabat esse uerbum  
DEI, ab ceteris occidentalibus christianis  
numquam falsificatum

## III

Ad quae iudei uerba pauca quae-  
dam primum obseruabimus. I. Anti-  
stes, cuius fieri mentionem animaduer-  
timus, Armenus, is est, qui COTE-  
LERIO, Lutetiis Parisiorum cum ipso  
uersanti, haberit apud Armenos Corin-  
thio-

thiorum unam ad s. PAVLLVM, eiusque ad Corinthios epistolam tertiam, sed apocrypham utramque haberi, retulerat. II. Hypobolimaeum s. THOMAE euangelium, *euangelium*, procul dubio, est *infantiae*. Neque enim ueterator solum THOMAE nomen mentitus est, uerum a coetibus orientis duobus, Armenorum speciatim, probabatur haec scriptio. III. *Fidei fundamentum unicum multis Africae, et Asiae ecclesiis euangelium hoc esse,* prae se ferensi iudeus, egregie mentitur

A. V Chri-

*retulerat*] Post haec exarata, didici ab illustrissimo archiepiscopo Armeno, qui in hac regia urbe uersabatur, haberi apud suos dictas epistolae, et apocryphas haberi. COTELERIVS in notis ad consit. apost. p. CCCCLIII, uide has epistolae, adnotacionibus instructas, in FABRICII cod. apocr. N. T. P. III. p. DCLXVII, ss. De eodem episcopo adi SIMONIVM bift. crit. N. T. P. II. p. CLXXXVI. Vscano ei nomen erat, fueratque in occidentis regiones missus, ad bibliorum Armenorum typis exscribendorum currandam editionem. Intellexi ex eo, ait SIMONIVS, bibliorum Armenorum corpus, antequam prelum primum euaderent, infra D. argenteorum uncialium pretium parari nequuisse. Quantum necesse fuit hoc esse impedimentum ad cognitionem sacrarum litterarum

*mentitus est*] bift. MANETIS, et Manichaeorum crit. p. CCCLVI

X DE LIBRIS APOCRYPHIS

Christiani homines omnes euangelia  
quatuor agnoscunt, eadem illa, qua nos,  
prosequuntur ueneratione, et, iure, ad  
ea exigi doctrinam contendunt. Ipsique  
adeo, quibus THOMAE probatur il-  
lud, non reiicienda modo reliqua non  
putant, uerum praferenda etiam du-  
cunt. III. Iudaeus ita porro, ut ab  
homine ad lumen caecutiente exspectari  
poterat, argutatur, reprehendens chri-  
stianos homines, quod quatuor tantum  
euangelia seruauerint ideo, quia, ut-  
cumque certe, inter se conspirare uide-  
bantur. Quod si aut edocitus fuisset me-  
lius, aut animo aequiori, quam distet a  
ueritate ista eius aduersatio, peruidisset fa-  
cile. Vt enim, quod res est, dicamus,  
multa ab iis, qui euangelia, quibus nos  
obsequimur consignarunt, tradita repe-  
rias, in quibus non circumstantiarum  
modo uarietates aliquae, sed repugnan-  
tia etiam, uti uidentur saltim, negoti-  
um sacrarum litterarum interpretibus  
faceant. In animum reuocare lecto-  
res uelim, quae de duodecim euangelii s.

MAR.



MARCI commatibus extremis adnotauimus. Quae nullam ob caussam aliam, quam, quod cum ceterorum, qui euangelia scripsere, narrationibus conciliari aegre possent, omissa viri docti existimarentur. Nihilo tamen minus commata illa, antiquissimorum exemplorum consensu, suo restituta sunt loco. Neque fugit, credimus, quemquam, quantae se difficultates offerant, familiae IESV CHRISTI enumerationes, a MATTHAEO textam unam, a LVCA alteram, conciliare contendenti. Haec etsi, omnibus temporibus, dubitandi de fide, aut adcuratione scriptorum sacrorum, idolatriae antiquae sectatoribus aequae, ac hominibus in christiano coetu opinionibus a uero aberrantibus infectis, speciem dederunt aliquam: non impediuerunt tamen, quo minus primi aeui ecclesia MATTHAEI pariter, et LVCAE euangelium, quorum profectum illud ab apostolo IESV CHRISTI, hoc a nobilissimo quodam eorum, qui for-

man-

---

*adnotauimus] bish. MANETIS, et Manich. cris. p.  
CCCXXXII*

*viri docti] u. GROTIUM, et alios*

## XII DE LIBRIS APOCRYPHIS

mandos se apostolis dederant, intelligebat, haberi sanctum debere arbitraretur. Quatuor igitur tantum a nobis euangelia admitti, si uerum est, ut uideri omnino debet, eam id unice ob causam fieri censemus, quod *dubietia* eorum, ab omni perpetuo ecclesia, subductis rationibus, fuit comprobata. *Sicut ex traditione accepi*, ait ORIGENES, de quatuor euangeliis, quae sola in uniuersae ecclesia, quae sub caelo est, citra controversiam, admittuntur

## III

Iam, ut et iudei, et aliorum fidei christiana aduersariorum argumentis fiat satis, in aprico erit ponendum, I. ss. patres habuisse indubitata quaedam argumenta, et criteria, quibus a certae auctoritatis libris, dubios distinguere potuerint, et hypobolimaeos II. Eos, in examinandis his libris, non prudenter modo, et circumspete, uerum, cum reli-

---

ORIGENES] Ως εν παρεδόσει μαρτύρων περὶ τῶν τέσσερων ἐναγγελίων ἀνὴρ μόνον ἀνατίθημε εἰς τὸν ἑταῖρον τὸν διεγένετον τὴν θεοῦ αὐτοῦ εὐχαριστίαν τοῦ θεοῦ. apud EVSEBIVM H. E. L. VI. C. XXV. pag. CCXXVI

religione etiam summa, esse uersatos  
 III. Vnde orti sint libri apocryphi, et  
 quod, per rei naturam, fieri, ut tales  
 non haberentur, haud posset. IIII  
 Apocrypha haec uarii generis esse, nu-  
 meroque pauciora multo, quam quidem  
 credi solet. V. Tantum denique abesse,  
 ut inter hos libros etiam pessimi, et ma-  
 xime deprauati, obesse christianaे reli-  
 gioni possint, ut pariter, ac reliqui, fa-  
 ciant ad eam confirmandam, testimo-  
 nium perhibendo hisce primariis fidei ca-  
 pitibus, esse I E S U M C H R I S T U M  
 D E I filium, (quisquis tandem sit horum  
 uerborum sensus) ipsumque, quod a DEO  
 sit missus, factis admiratione dignis demon-  
 strasse. Et haec ea sunt ipsa, quae infitia-  
 ri caelestis doctrinae hostes solent

## V

Thesis prima. *ss. patres signa ha-*  
*buere quaedam, et notas, ex quibus constare*  
*posset, libros apostolorum, et apostolicorum*  
*uirorum nomine uenditatos, aut euictae esse*  
*auctoritatis, aut spurios*

I. Re-

### XIII DE LIBRIS APOCRYPHIS

*I. Regula prima.* ss. patres, repreäsentatam publicis tabulis, quae se offerrent ipsis, doctrinam, ad eam exiger solebant, quae, in coetibus omnibus, tradita, ab apostolis, esset, inibique, haud mutata, utpote omnibus modis sibi constans, adseruaretur. Docuerant ubique apostoli, esse IESVM DEI filium, CHRISTVM, MESSIAM, adfixum

*Regula prima]* Hoc pacto uersari nos D. PAVLUS iubet. Is I. Cor. c. XII. u. III. Gal. c. I. u. VIII. I. Tim. VI. u. III. IIII. V. in ferendo de uerbi praeconibus iudicio, ad doctrinam, traditam sibi a IESV CHRISTO, et propositam a se deinceps, adtendi animum iubet, uiderique, quantum aut componi ea, cum eorum oratione possit, aut distare ab illa uideatur Quae, in examinandis libris, alio se pacto habere non possunt. Ad *sanioris doctrinae praescriptum* libri spurii non minus debebant, quam praecones falsi nominis exigi. οτι γνωμην την εν αυτοις (nempe in libris adulterinis apocryphis) θεοφραντην προδιγεστης πλειστον δοτην αληθειαν ορθοδοξιαν απαιδευσαι. EVSEBIUS H. E. L. III. C. XXV. p. LXXXVIII. Hinc ad Philippenes scribit POLYCARPVUS Διδούσι πολιτουντες την ματαιοτηταν κη παίδες ψυχοδοδασκαλεις των πολλῶν ἐπὶ τούς ἐξ ὀρχῆς οἵμην παραδοθέντα λόγους ἐπισφέψαμεν. Relictis igitur plurimorum erroribus, et spuria doctrina, ad eam, quae tradita nobis a principio est, reuertamur

fixum cruci, obiisse mortem, rediisse in uitam, et in caelum tandem esse euentum, eumque docuisse, unum esse DEVVM, qui sit unice colendus, atque fore, ut qui ipsi docenti fidem habituri essent, eiusque obsequuturi praecipitis, condonatis criminibus, fruerentur uita aeterna: ac tandem confirmauisse, quae doceret, admirandarum rerum, et in publica luce gestarum copia, eoque in primis, quod in uitam sedenuo, rupitis mortis pariter, sepulcrique uinculis, uindicari. Praecipua haec sunt christianae religionis capita, et ab initio statim, et omnibus in locis proposita. Proclue hinc est intellectu, libros, qui doctrinam aut oppositam huic, aut diuersam certe ab illa traderent, certe, et necessario suppositios esse debere. Fieri siquidem nequit, ut quum scriptor idem sis, qui coram docebat, alia tamen dogmata litteris consignauerit, quam quae uiuus, et praesens docuerat, iis in locis, ubi erat uersatus, neque ille tantum, sed et ceteri euangelii doctores, eadem cum ipso a IESV CHRISTO ratione missi

Nec

## XVI DE LIBRIS APOCRYPHIS

Nec tamen inde confici debet, traditionem fidei normam esse, et de sacris litteris ex illa, non uero e litteris sacris de traditione esse iudicandum. Multum enim intercedit inter traditionem recentem illam, a christianae inde religionis primordiis ductam, eamdem in omnibus, quas docuere apostoli ecclesiis, confirmataque hominum, qui docentes audiuerant testimonii; et inter eas, quae, quum longius a fontibus recedant, nec ecclesiae uniuersae, ac eorum, qui eas ex ore apostolorum acceperant, testimonii sint adprobatae: fundamento carent eo, quod certae esse istas auctoritatis demonstrat. Quae ad primum genus pertinent, pro ueris, ac certis non haberri non possunt, de illis uero, iure, dubitari potest. Qui Scyllam uitare uoluerit, eum cauere sedulo, ne in Charybdin incidat, oportet, neque reiiculam quis-

---

traditionem fidei normam] Hic ego ecclesiae, et traditioni nihil trado supra scripturam. Ducem solum facio ecclesiam ad ueram scripturam: est potius conditio quaedam, sine qua libri canonici discerni non possunt a non canonicis. M. ANTONIUS  
DE DOMINIS de republ. eccles. L. VII. c. I  
XVIII

quam sententiam reputabit ideo, quod  
in deteriores eam usus alii conuerterint  
Traditio, hoc est ecclesiae testimonium,  
si modo constet id esse ecclesiae testimo-  
nium, grauissimum, et firmissimum testi-  
monium est, ea uere facta, quae facta  
esse dicuntur: ea uere, a CHRISTO  
tradita, quae dicuntur ab eo tradita fuis-  
se. Eorum, quae egisse IESVS CHRI-  
STVS ferebatur, nihil suis oculis uide-  
rat s. LVCAS, non ex ipsius ore diuina  
dogmata exceperat, nec tenebat eorum  
quidquam, nisi quod ex hominum con-  
stabat narrationibus, qui aut uidissent  
IESVM CHRISTVM, aut docenti  
ipsi adfuissent. S. Epistolae ad Ebraeos  
scriptor (sive de se ipse is, sive de iis  
pariter, ad quos scribebat, orationis  
forma frequenti oppido usus, dicat) fa-  
lutaris doctrinae nihil tenebat, nisi quod  
ab iis edocetus fuerat, qui ex ore eam  
optimi seruatoris, coram, perceperant  
Sanctissimum hoc euangelii depositum,  
quod apostoli fidis hominibus tradebant,  
sincerum, et intemeratum, initio, in  
Christianorum hominum coetu, serua-  
tum

B

perceperant ] Ebr. II. III

## XVIII DE LIBRIS APOCRYPHIS

tum fuit. Quod quidem eo fieri facilius, principio, potuit, quum capitum si dei numerus adeo nondum excreuerat, ut factum deinceps, aestuantium hominum disceptationibus, et obscura diligentia, nouimus

Sed fortasse dixerit quispiam, fieri hac ratione potuisse, ut fraudatoris aliquis liber, falso apostoli, aut apostolici cuiusdam uiri nomine uenditatus, auctoritatis reputaretur certae, si quidem eorum doctrinam expresserit adcurate. Est istud quidem aliquid, sed nequaquam aut periculosum uideri, aut obesse sanctissimae fidei potest. Verum, qua religione, illud etiam incommodum ss. patres cauerint, ex iis, quae adiiciam modo, in aprico erit

II. *Regula secunda.* ss. patres essentne libri, qui apostolorum apostolicorumque uirorum praeferebant nomina, ab omni christianorum hominum coetu pro-

---

SS. patres] SS. patres, in probandis libris, perpetuum ecclesiæ testimonium esse sequutos, adparet, ex EVSEBII H. E. L. III. C. XXV  
Τας προτερης την εκκλησιαστικην παραδοσιν ολυμπειον  
η απλακειον και απωλεογομενων γεγραφας

## DISSERTATIO XVIII

probati inde ab initio, et conscripti ab illis, quibus tribuebantur, existimati, qua summa fieri diligentia poterat, anquirebant. Minoris haec res erat negotii, quod esset in ecclesia non interrupta praefulum, doctorum, scriptorumque ecclesiasticorum series, qui, inde ab apostolorum aetate, ecclesiam docuerant, et adserendae religioni, aduersus iudeeos, et gentiles pariter, ac haereticos, operam insumserant. Ex scriptis eorum, in quorum iam suffecti locum erant, perspectu fuit facile, quosnam illi libros ab apostolis, apostolicisque uiris traditos accepissent, laudatis scilicet ipsorum nominibus, et adscriptis subinde uerbis, quibus usi essent in suis commentationibus. Vnde conficiebant certae hos libros esse auctoritatis. Profecto enim res suffulta tot testimonii eccliarum tantum non omnium, inde, ab eo tempore, quo esse cooperant primum, excipientibus se antistitibus uariis,

B. II

riis,

*quosnam illi] EVSEBIVS de prioriS. PETRI epistola  
μίστη δὲ οὐ ἂπλα σέξεβορος ὡς ἀναμφιλέκτω,  
ἐν τοῖς σφῶν ἀντῶν κατακέχεντο συνγενεῖς*  
H. E. L. III. C. III

## XX DE LIBRIS APOCYPHIS

riis, et doctoribus, ponderosis adeo argumentis euicta uidetur, ut ambigi de ea minime debeat. Homines difficillimi etiam, et dubitandi libidine omnium maxime abrepti, nisi religionis caussa age-retur, impedirentque commoda, aut in luce posita illa, aut caelata callide, uincisse huius generis indiciis non paterentur modo, uerum uerentur etiam illis, quoties de re, quae dicitur accidisse, disqui-retur. Eodem ducti arguento II, per-suadebant sibi ss. patres, libros omnes, qui, quum praescripta apostolorum apostolicorumque uirorum nomina haberent, non tuerentur tamen se, constanti, et perpetuo testimonio, aut subditios esse, aut incertae, dubiaeque auctoritatis. Hinc etsi nihil haberet liber aliquis, quod sanctissimae fidei aduersaretur, uiderique adeo lectu utilis possit: in cano-nem

---

II. ] εἴ τις γέλει τὸ διάτημα ἐν συγγράμμασι τῶν κατὰ διδόξας ἐκκλησιαστικῶν τις ἀνὴρ εἰς μητροῦ ὑγεα-γεῖρον ποιῶσεν. EVSEBIVS ibid. L. III. c. XXV

*utilis posset*] Ita e. g. II. S. PETRI epistola canonis inserta non fuit, et si cognitu utilis multis uideretur, πολλοῖς γελάσας φαγεῖσθαι. EVSEB. L. III. c. III

nem tamen, ut uocant, non referebatur,  
quoniam *ad Hebreos* eius, uniuersae eccle-  
siae iudicio, haud esset confirmata, pate-  
retque, hanc illum ab apostolo, aut apo-  
stolico uiro, cuius in nomine adparue-  
rat, profectum, initio statim, non cen-  
suisse.

*Regula terria.* ss. patres, quum libros  
haberent, de quibus euictum esset, ab  
apostolis eos, aut apostolicis uiris fuisse  
consignatos, utebantur illis, ueluti nor-  
ma, et regula, ad iudicandum de reli-  
quis, familiari, et usitata perpetuo gram-  
maticis omnibus ratione, qui quum de  
historiis, quarum suspecta est auctoritas,  
disquiritur, componere eas cum illis so-  
lent, de quibus non facile quisquam du-  
bitauerit. Libros uersamus s. AVGVSTI-  
NI illos, quos deberi ipsi insitiatur ne-  
mo, ex quibus diuinari facile potest, qui-  
nam falso s. patri tribuantur. Ergo  
ubi prodiissent libri apostolorum, aut  
apostolicorum uirorum insigniti nomi-  
nibus, pensitabant antiquiores, i. pos-  
sintne in iis propositae ab apostolis do-

B. III Etrinae

## XXII DE LIBRIS APOCRYPHIS

Etrinae uestigia animaduerti. II. Iudicauerintne, et scriptis fecerint testatum primi, qui in apostolorum locum successerant, ab illis eos fuisse conscriptos Quod si utrumque recte se habebat, in apostolicorum scriptorum numerum eiusmodi uolumina referebantur: contra ea, si unum, aut alterum caput demonstrari satis non posset, abesse illa a sacrarum litterarum corpore iubebant S. IACOBI, S. IVDAE, S. PETRI posterior, et S. IOANNIS secunda, et tertia epistola nullo pacto ab apostolorum abhorrent doctrina, quo nomine in canonem cogi omnino merentur: at uero, quoniam *authentia* eorum, constanti, et perpetuo ecclesiae testimonio, se non tuerentur, reieci in librorum de quibus non liquebat, ordinem fuerunt. Admitti eos periculose non erat, quoniam habent nihil, quod sanctissimae fidei non conueniret, uerum in canonicorum li-

*vestigia.*] Πόρω δὲ πώ ἡ ὁ τῆς φράσεως παρὰ πὸ  
νῦθος τὸ ἀποστολικὸν ἐναλλάξτε χαρακτῆρα: ἡ τέ  
γνῶμη η̄ τῶν ἐν ἀντοῖς. φερομένων αἰσθανετού  
“εστον τῆς ἀληθῆς ὀρθοδοξίας ἀπάδυστη κελ. EVSEB.  
L. III. c. XXV. H.E.

brorum numerum adserere eos priorum saeculorum doctores ausi non sunt, quod non satis de eorum *audacia* constaret

## VI

Hanc ss. patres canonicos libros, ab apocryphis distinguendi, iniuerunt uiam, quam ratio ostendit ipsa, et sequetur, dum a praeiudicatis opinionibus homines liberi, nec suae tantum utilitati seruituri, uerum, sine fuso, indagabunt. Insimulari tamen emendatis sacris addictos uideas, discessionem illos ab ea, recta adeo, et antiquitatis omnis consensu firmata, facere, ut abripi se temere alucinationibus spiritus, nescio cuius, peculiaris certe, patientur. Nec temperauit sibi, a tali calumnia, ipse SIMONIVS, contentiosorum hominum turbam sequutus. Commemoratis enim is, ut solet, perturbate satis legibus, quas ad discernendos libros sacros ss. patres sibi dixerint, in eos inuolat, qui defaciatiorem doctrinam, in Francia, fuerant complexi. His, inquit ille, *argumentis*,

B. IIII

ueræ

---

*inquit ille]* SIMONIVS *bijst. crit. N. F. T. I. p. XI*

XXIII DE LIBRIS APOCRYPHIS

*uerā esse, quae de noui foederis libris perhibentur, euinci satis potest, ut opus adeo non sit, recipere se ad spiritum, nescio quem peculiarem, extremorum horum temporum invento, demum inuectum. Non fingi quidquam potest, quod sanæ menti aduersetur magis, quam uerba haec confessionis fidei eorum, qui, aliquo abbinc tempore, Reformati ecclesiastarum Franciae uolunt adpellari. In canone libros, qui sacrarum litterarum corpus iam conficiunt, referri, merito iure, existimamus, non ecclesiae magis consensu uniuersae, et suffragiis uicti, quam SPIRITVS s. interiori persuasi testimonio At uero ss. patres, addit SIMONIVS, antiquos haereticos omnes, canonicos hos libros esse negantes, communi ecclesiae consensu retulerunt. Respondebimus ad curationi, carptim, et breuiter*

Duo se obiiciunt capita, de noui foederis libris disquarentibus. Prior quaestio est de facto, quaeritur enim, an ab apostolis, et apostolicis uiris, quorum ornati sunt nominibus, consignati debeant uideri. Posterior quaestio est de fide, quaeritur, num libri ipsi diuinam auctoritatem habere, et ita canonici que-

queant reputari, ut et credere illis tuto,  
 et obsequi illorum prae scriptis liceat  
 De priori capite ss. patres inter, et haer-  
 eticos, de posteriori, inter eosdem,  
 et homines a fide plane alienos, dispu-  
 tabatur. Ad firmantes itaque Refor-  
 mati, se libros noui foederis canonicos  
*non consensu magis communi, et suffragio*  
*ecclesiae persuasos, quam s. SPIRITVS testi-*  
*monio uictos,* reputare, ad posterius caput  
 digitum intenderunt, non ad prius. Illi,  
 in professae suae fidei formula, conten-  
 dunt: tenere se, libros noui foederis  
*canonicos esse, siue, diuina instructos au-*  
*ctoritate, non tam ecclesiae testimonio, quod*  
*reliculum ipsis tamen non uidetur, quam*  
*s. SPIRITVS beneficio, illius, qui hanc fi-*  
*dem in homine operatur, quae solis*  
*rationis humanae uiribus comparari*  
*non possit.* Quam si sententiam probare

B V

SIMO-

*non possit]* Redit Reformatorum Franciae, in ipso-  
 rum fidei confessione, sententia ad S. AVGUSTI-  
 NI illam, Cont. Ep. Fund. C. XIII. Eos seque-  
 mur, inquit, qui nos in uitant prius credere, quod  
 nondum ualeamus intueri, ut, ipsa fide ualentiores  
 facti, quod credimus intelligere mereamur, non  
 iam hominibus; sed ipso DEO intrinsecus men-  
 tem nostram firmante, atque illuminante

## XXVI DE LIBRIS APOCRYPHIS

SIMONIVS nolit, ne in Pelagianorum erroris ueniat suspicionem, a qua, ut longissime abessent, operam semper dedere Reformati, uiderit. Ad prius caput quod pertinet, num scilicet libri noui foederis sint auctoritatis certae, siue sinceri foetus eorum, quorum nomine inscripti sunt, auctorum, de eo, inquam, sibi peculiari SPIRITVS s. indicio constare, numquam adseruere Reformati. Nec est futurus quisquam, quin intelligat, turpiter omnino eos, id si adfirmassent, se fuisse datus. Hinc contendenti SIMONIO, non posse christiano homini, nisi ecclesiae testimonio, constare, libros foederis noui esse ab apostolis, apostolicisque uiris profectos, Reformatorum obnicietur nemo: at uero in animum sibi inducenti illi, christianos homines, de *divina* horum librorum *auctoritate*, certos esse, nisi ecclesiae suffragio, non posse, Reformatorum nullus subscribet. Neque potest enim illa sententia iis, qui ratione uti didicerunt, absurdia non uideri. Declaraturi rem exemplo sumus

Li-

---

exemplo sumus] Adscribam M. ANTONII DE DO-

Librum Mahumedianorum, quem  
*Alcoranum* vocant, in euangelii, *Mabu-*  
*medianos*, in coetus christiani substitua-  
mus locum. Duas deinde proponamus  
quaestiones. i. Sitne uere a MAHUMEDE  
proditus ille. ii. Polleatne diuina au<sup>t</sup>o-  
ritate. Prior, quae spectat ad au<sup>t</sup>o-  
rem libri, communi Mahumedianorum  
soluitur testimonio. Est in confessio  
MAHUMEDEM, siue suo tantum obsequiu-  
tum ingenio, siue ab homine, qui a iu-  
daeis, aut christianis sacris discessionem  
fece.

---

MINIS Spalatrensis antisitis, et eruditissimi,  
superiore saeculo, sanctioris disciplinae docto-  
ris, uerba. Ita ille, *de rep. eccl. L. VII. C. I.*  
*XIII. de ratione in usam reducendi hominis*  
a fide alieni. *Aliud erit hunc infidelem adsen-*  
*tiri, hunc librum esse IOANNIS: ALIUD fidem*  
*adhibere iis, quae in eo libro scripta sunt. Et ita*  
*ALIA est ei danda probatio, qua constet ei, esse li-*  
*brum IOANNIS: ALIA uero, qua ostendatur,*  
*uera esse quaecunque scripsit IOANNES. Prior*  
*probatio, ex SOLA TRADITIONE HUMA-*  
*NA, PETITVR - - Hoc ei probato, ac proin-*  
*de, praesito per eum ad sensu, librum esse IOAN-*  
*NIS, tum posita, SPIRITU SANCTO OPE-*  
*RANTE, CREDIT IIS, QVAE IN EVAN-*  
*GELIO JOANNIS scripta sunt, rel.*

## XXVIII DE LIBRIS APOCRYPHIS

fecerat, adiutum, litteris librum consignasse. Verum si agatur de posteriori quaestione, nemo sane ad iudicium, vel testimonium Muhamedanorum, provocabit, nisi, qui existimet, eum, qui tuendas in se partes suscepit, recte etiam, et incorrupte sententiam posse pronunciare. Poterit, nullo negotio, exemplum ad caussam nostram pertrahi. Rogati enim, qua ratione inducti, libros novi foederis ab iis perscriptos credamus, quorum nominibus ornantur, constans ecclesiae uniuersae testimonium adpellabimus: si uero requiratur a nobis, cur eosdem *diuina auctoritate* insignes, atque canonicos adeo, ut fidei habet confessio, reputemus, haud iam ecclesiae testimonio nos tuebimur. Qua ratione, non melius caussae consulteremus nostrae, quam suae Mahumedanae superstitionis adfertor, qui praefidum, et *doctorum haereseos suae auctoritate* innixum, diuinum librum Mahumedicae doctrinae corpus se reputare, caussaretur

Ego

Ego uero, loco quodam, s. AVGVSTINVS  
ait, euangelio non crederem, nisi me commo-  
ueret ecclesiae auctoritas. Audacius haec  
aliquantum a s. AVGVSTINO, disputandi  
feruore abrepto, prolata, et eius sunt  
generis, ut non carere illa uitio intelle-  
cturus sit facile, qui adcuratiori paullo  
industria, sub examen uelit uerba re-  
uocare. Fecit interea ueneratio, qua  
prosequi sanctum patrem tantum non  
omnes solent, ut uarie illa interpretati  
sint multi, quo, melius aliquanto, iis  
sua ratio constet. Quod fieri tamen uix  
potest, nisi i. pro *auctoritate testimonium*  
substituas. Non enim *auctoritate*, quae  
facta esse dicuntur, uere accidisse, euin-  
ci potest; sed *testimoniis*, quorum uerita-  
tas ab hominum non pendet *auctoritate*,  
uerum a testata illorum fide, argumen-  
tisque, ex quibus, perspexisse eos satis,  
quae testantur adpareat. Quemadmo-  
dum itaque *auctoritatem* subinde dicimus,  
ubi intelligi *testimonium* uolumus: ita sal-  
ua erit s. AVGVSTINI cauſa, si, hoc loco,  
eadem eam significatione uenire adfir-  
me-

---

S. AVGVSTINVS] Cont. Ep. Fund. Cap. V

XXX DE LIERIS APOCRYPHIS

memus II. Distinguenda diligenter euangeliorum *av̄ḡv̄t̄ia*, factorumque, et doctrinae, in illis traditorum, ueritas. De ista constare, nisi ecclesiae testimonio, non potest, in hac uero inepite eodem uteremur, si quidem is, cuius res agitur, testari nequit. III. Nec ambigo etiam, s. AVGVTINI his uerbis, euangeliorum *av̄ḡv̄t̄ia*, non ueritatem factorum, doctrinaeque, propositorum in illis, indicari. Ipsum enim inter, et Manichaeos non disceptabatur, num doctrina CHRISTI diuina sit, atque euangelium adeo DEO dignum uideri debeat, quod quidem illi in dubium non uocauerant; uerum, an certae essent *auctoritatis* euangelia, et uere ab apostolis, aut primis eorum discipulis profecta, quaerebatur Pernegantibus hoc Manichaeis, adfirmabat contra s. AVGVTINVS. Cuius verba exponi commodius non possunt, si quidem honori consuli ipsius debeat.

Ce-

---

S. AVGVTINVS] *contra FAVSTVM* L. III  
VI. L. XXXII. XXI

Ceterum, quae de fanatica sententia,  
et peculiari spiritu, aduersus Reformatos, disputat SIMONIVS, uiderit is, ne in  
ipsos pontificios reiici commode possint  
R. P. COMBEFISIVS librum esse canonicum  
licere nemini dubitare perhibet, ut pri-  
mum ille relatus sit, ab ecclesia in cano-  
nem, quae libros canonicos ab apocry-  
phis, diuino in apostolis, et successoribus  
spiritu, dispescere doceatur. Quae  
quidem opinio ab illa, quam Reforma-  
tis tribui uidimus, alia re nulla discre-  
pat, nisi quod eruditus Dominicanorum  
ordinis presbyter spiritum illum *donum co-*  
*olus* ad antistites tantum, qui in aposto-  
lorum subiisse locum dicuntur, referat:  
quum Reformati beneficium hoc ad  
omnes, qui uere credunt, uideretur  
pertinere, essetque adeo fidei, non mo-  
rum futura praerogatiua. Ego uero  
utra sententiarum harum e sacris litteris  
confirmari commodissime possit, scire  
perue-

---

*doceatur]* Notis ad HIPPOL. de SVSAN. et DA-  
NIELE. Andar. noniss. biblioth. PP. P. I. p.  
LXIII

## XXXII DE LIBRIS APOCRYPHIS

peruelim. neque enim locum inuenio ullum, ubi tali priuilegio antistites dicantur esse donati. Alioqui etiam hominum, religionis causa congregatorum, coetus, ineptissime criticam artem exercuisse, librisque spuriis, ac subditiis fuisse deceptos, experiundo saepe didicimus

## VII

Thesis secunda. ss. patres, in pensitanda librorum doctirna non prudenter modo, et circumspecte, uerum summa etiam cum religione sunt uersati

Suffecerit, ad sententiae huius demonstrandam ueritatem, intendisse digitum ad rationem, qua in ordinandis libris, qui apostolorum praferrent nomina, uersarentur. ORIGENES in tres eos ordines describit. *Verorum* primum, et certae auctoritatis, *supposititorum* secundum, et *mixtorum*, siue *mediorum*, tertium, hoc

---

uerorum primum] Γηνετόν, ἡ νόθος ἡ μικτὸς T. XIII  
in IOANN. p CCXI. u. VALESIVM adnotatt. in EVSEBII H. E. L. VI. XIII. p. CXVI  
et EVSEBIVM L. III. XXV. ac in locis  
aliis

hoc est eorum, de quorum auctōribus  
et si non constaret, doctrinam tamen  
non continerent ineptam. Eamdem  
uiam insitit EVSEBIVS, licet uerbis ali-  
quantum diuersis utatur. Collocat  
is primo loco libros, *de quorum ambigi*  
*auctōritate* non potest, illos scilicet, quos  
tales uniuersa ecclesia credat, quorum-  
que ἀνθετίαν nulla umquam eius pars  
in dubium reuocauit, secundo dubios,  
quorum incerti auctōres effēt, et quos  
constans, ac perpetuum ecclesiae testi-  
monium extra νοθεῖας aleam non posu-  
it. Huc quinque uolumina, de quibus  
dixi, epīstola ad Ebreaos, S. IOANNIS apo-  
calypsis, et epīstola BARNABAE, rel. refere-  
bantur. Tertio tandem falsos omnino, qui  
et pretii sunt nullius, et supposititii. Et

C

hi

potiſſi] ὄμολογόμενοι

dubios] ἀνπλεγόμενοι

falsos omnino] παντελῶς νόθεις, u. EVSEB. H. E. L.

III. C. XXXI

pretii sunt nullius] νόθεις, adulterinos adpellat EV-  
SEBIVS libros, qui scriptoribus, quorum pre-  
ferrent nomina, non deberentur, παντελῶς νόθεις,  
omnino adulterini igitur sunt libri, qui et falso  
nomine sunt praescripti, et pretii nullius'

### XXXLIII DE LIBRIS APOCRYPHIS

hi quidem fere *apocryphi* adpellantur, ancipitis, et multiplicis potestatis uoce Modo enim libros, quod dubiae au&toritatis essent, e canone reiectos, et si mali haberent nihil, modo libros et falsos, et deprauatos notat. Extrema significatione, synopseos, quae cum s. ATHANASII operibus circumfertur, scriptor, uolumina nonnulla in apocryphis referri melius, quam legi, censet. Luculenter haec, credimus, euincunt, quam circumspete, et qua religione, ss. patres agerent, si aut admittendus in canonem liber esset, aut ab illo prohibendus.

### VIII

Cuius rei obuim habetur multo praeclarissimum exemplum, in ALEXANDRINO DIONYSIO, esse ne apocalypsis, s. IOANNIS nomine praescripta, in canonorum librorum referenda numerum, faecu-

---

*canone reiectos*] Opus aliquod nec falsi nominis, nec doctrinae noxiae, adpellari posse apocryphum, quod extra canonem ab omnibus ecclesiis collocetur, CO-  
TELERIVS, Iudic. de HERMAE Pastore, PP.  
apost. T. I. p. m, LXX

*apocryphis*] Ἀποκρύφης μᾶλλον οὐδὲ ἀναγνώσεις ὡς  
ἀλτῶς ἔχει. Opp. ATHANASII T. II. p.  
CXXXLIII

saeculo tertio, dispiciente. Persuaserat sibi NEPOS quidam, doctus alioqui prae-ful, et uir bonus, fore, ut in terram IESVS CHRISTVS rediret, imperaretque, una cum sanctis hominibus, omnibus laetitiis delibutis, sed minime noxiis Apocalypsi nitebatur ille, cuius, cum suis, mirum in modum, praedicabat prae-flantiam. Quare inductus, aduersus eos, qui *allegoriis* modo s. IOANNEM, ad indicandam sententiam, uti, adfirmabant, est commentatus. DIONYSIVS, conuocatis quidquid in Aegypto homi-num erat doctiorum, et in sanctiori di-sciplina uersatorum adprime, de NEPO-TIS pariter sententia, et apocalypseos *au<sup>g</sup>stevit*a**, continuis diebus tribus, anqui-rit, in consilium antiquos scriptores ad-hibet omnes, eorumque testimonia pen-sitat curate. O prudentiam in DIONYSIO admirabilem, cum inusitata coniunctam modestiam! Comperiebat eorum non nullos, quorum iam subibat locum, apocalypsin non

C. II abdi-

---

*comperiebat*] EVSEBIUS H.E.L. VII. XXV

## XXXVI DE LIBRIS APOCRYPHIS

*abdicauisse modo; uerum confutasse etiam,  
ut pote quae nec intelligi posset, nec  
rationi esset conueniens. Adcufari ani-  
maduertebat, reuelationis falso nomine  
esse eam praescriptam, quam obscuras  
res producere in lucem, non caliginem  
offundere, et ignorantiam meram dece-  
ret, et CERYNTHI adeo haeresiarchae,  
praetexentis deliramentis suis s. IOAN-  
NIS nomen, commentum uideri, et quae  
sunt alia, apud EVSEBIVM, uehementius  
etiam, a DIONYSIO, pronunciata. Ale-  
xandrinus praesul, non ad quiescendum  
sibi in praecessorum opinione putans,  
qua pietate erat, et modestia, tantum  
abest, ut damnare apocalypsin uelit, ut  
refertam illam mysteriis, quae quidem  
ipse non capiat satis, prae se ferat. Per-  
suadet sibi, sacrum scriptorem imagine  
rerum, quae ob oculos nobis uersantur,  
et sub sensum cadunt, spirituales uerita-  
tes adumbrare. Iustumque adeo libro  
statuit pretium, et si a IOANNE illum pro-  
ficiisci uix potuisse, operam det deinceps,*  
*ut*

---

*abdicauisse modo ] ηθητον καὶ αυτοκένταρον. EVSEB.  
ibid.*

ut probet, a cuius nimirum stilo, descendendi forma, ambitu, et sententiis absit quam longissime. Quibus argumentis inductus, perscriptam apocalypsin a IOANNE quodam, homine christiano automat, cui nomen illud a parentibus, apostoli consecraturis memoriam, inditum queat uideri

## VIII

*Thesis tertia. Vnde orti sunt apocryphi libri, et quod fieri, per rei naturam, non potuerit, ut tales non essent*

Adeo pulchra erat optimi seruatoris uiuendi ratio, adeo sublimis ipsius dignitas, et diuina, adeo excellens doctrina, tam illustres, et numero tanto, quibus eam confirmabat, res admirandae, ut fieri non posset, quin ad earum enarrationem animum adpellerent quam plurimi. Quae res fecit, ut multae de IESV CHRISTI rebus gestis prodirent commentationes, adcuratae magis aliae, aliae minus. Quas periisse dolemus, quoniam adhibere in consilium eas, et de scriptorum charactere, ac stilo potuissent iudicare. s. LVCAS, ubi euanc-

C. III ge-

iam,  
nec  
ani-  
nine  
uras  
hem  
ece-  
hae,  
DAN-  
quae  
tius  
Ale-  
lum  
ans,  
tum  
, ut  
dem  
Per-  
gine  
tur,  
rita-  
bro  
pro-  
eps,  
ut  
  
SEB.

## XXXVIII DE LIBRIS APOCRYPHIS

gelia, siue narrationes, quae suum antecesserant, commemorat, defuisse illis quaedam fatetur; non damnat ea, ut potest conficta, tantum modo, et frugis malae. In sequenti tempore, de apostolis, eorum itineribus, propositaque ab ipsis doctrina exponebant uarii. Homines animo bono, quum primum aliquid ab auctoribus, ut ipsis uidebantur, locupletibus, essent educti, mandare illud litteris solebant; at uero neque praefidiis ad scribendum omnibus satis instructi, neque s. SPIRITVS ope adiuti ea, qua carere non poterant, specimina magis, quam iustas dabant historias, et adcuratas. Contra ea alii, quum admiscere christianaे doctrinae philosophiam uellent, quam profitebantur, ad texendos de IESV CHRISTO, eiusque apostolis commentarios, eo se animo applicuerunt, ut possent eadem opera,  
systema

---

instructi ] Quum tantum impræsentiarum hoc necesse sit dicere, exstitisse quosdam, qui sine spiritu, et gratia, conati sunt magis ordinare narrationem, quam historiae tenere ueritatem. ORIGENES  
Proem. in MATTHAEVM

systema suum legentibus propinare Ipsa christiana ecclesiae ratio, ut euitari isthuc incommodum non posset omnino, efficiebat. Si enim ecclesiastica haec respublica ad iudaicae efformata modum fuisset, si ab initio imperio aliquo, magistratibus, auctoritateque se tueri potuisset summa, si uni paruisset modo, et in unam coacta prouinciam fuisset: non uidisset fortassis lucem falsarum enarrationum tanta multitudo. Deprehendi scriptores potuissent, suppliciis adfici, subigique ad necessitatem aut palinodiae, aut confirmandi ea, quae scribere ueriti non essent adpositis argumentis, et idoneis. Verum dissipata, per terrarum orbem uniuersum, erat ecclesia, et inter populos, sermone utentes uario, diuisa, principibus subdita illis, qui tantum aberant, ut obicem ueteratorum libidini ponerent, ut fauere illi potius, e re ipsorum uideretur. Nihil enim optabant impensius, nihil habebant antiquius, quam proscissam ecclesiam, schismatibus, et sectis, odio se prosequentibus, uidere, nec fieri adeo poterat, quin partes essent diuer-

C. IIII

sae,

XXXX DE LIBRIS APOCRYPHIS

sae, haereses, et quas pariebant illae, narrationes falsae. Quum enim sectae omnes, niti se filii DEI auctoritate, uellent uideri, ex libris uero, quorum ab ecclesia prabaretur *avertia*, conuinci se errorum, aut sententiarum recens confitcarum uiderent: relinquebatur illis praesidii nihil, nisi, aut intertexta falsa scriptis illis cauſſarentur, aut adulterina effingerent. Prioris criminis Manichaeos, haereticos alios, haud paucos, postulatos posterioris fuisse, nouimus

Adfert obſeruationem RICHARDVS SIMONIVS, noſtræ haud diſſimilem. Non obſcura ſunt, quæ de ſcriptoribus quibusdam, publica auctoritate, ad reipublicae Ebræorum historiam describendam, conductis, ſuſpicatur: neque illud fugere quemquam potest, fuisse eam ſententiam, quoniam firmo ſatis talo niti non uideretur, a multis impetitam Christiana ecclesia, quum in locis diſtributa uariis, neque in unius formam reipublicae eſſet redacta, ut eius generis ſcriptoribus non poterat. *Haec cauſſa fuit*

suit baereticis non nullis, inquit SIMONIVS, iam a nascentis ecclesiae tempore, de libro-  
rum apostolicorum ueritate, quae publicis  
documentis non confirmarentur, ambigendi  
Conqueritur, in epistola quadam, S. IGNATIVS,  
audire se aliquos, qui posse se euangelio fi-  
dem habere, negarent, nisi consignata in ar-  
chivis uiderent. Occurrit illis s. martyr,  
et scripta inibi esse, ait; sibi uero mortem  
IESV CHRISTI, eius in uitam redditum, et  
fidem, uerorum archetyporum loco esse  
Exponemus hunc S. IGNATII locum, et  
doctius eum aliquanto pronunciare ui-  
debimus, quam quidem, ex hiulca, et  
minus clara SIMONII uersione, uidetur  
adparere

*Admonitos uos uolo, s. inquit IGNATIVS,  
in sua ad Philadelphenses epistola, ne conten-  
tione abrepti, agatis quidquam, uerum ad  
C. V eum*

SIMONIVS] biss. crit. N. T. P. I. p. II.

*inquit] Παρεγγέλω δὲ ὑμᾶς μηδὲν κατ' ἐργάζειαν ποζάρ-  
σειν ἀλλὰ τρεπάντας μετρομέθειαν. Ἐπεὶ γὰρ πολὺ<sup>ν</sup>  
λεγόντων δὲ πάντα μη ἐν τοῖς ἀρχαῖοις [al. ἀρ-  
χεῖοις] εἴη υἱὸς ἐν τῷ ἐπαγγελίῳ τοῦ πατέρων. οὐ λέγον-  
τος μηδὲ ἀυτοῖς οὐδὲ γεγραπταί ἀπογέιθησσαν μετο-  
ρθεῖ σπονέται. Εμοὶ δὲ ἀρχεῖα εἰσὶν Ἰησος χειρός.  
Τὰ δὲ θηγαντα ἀρχεῖα, οὐ σανδέει οὐδὲ θαρατει οὐ  
ανάστασις ὁντά, οὐδὲ πίστις οὐδὲ ἀνάστασις rel. epist.  
ad Philadel. s. VIII. p. m. XXXIII*

## XXXXII DE LIBRIS APOCRYPHIS

eum modum, quem doctrina IESV CHRISTI praescribit, instituatis omnia. Audiui enim dicentes aliquos, nisi in archiis (exemplis antiquis) scriptum reperero, non credam, esse in euangelio scriptum. Mibi uero regentis illis, scriptum esse, ita est, aiunt, quoniam scilicet prius est repositum. Mibi quidem archiuia mea, (exempla antiqua) sunt IESVS CHRISTVS, mea archiuia (exempla) authentica, crux eius, mors, in uitam redditus, et quam ipse docuit, fides. Hoc modo, s. IGNATII locum circumductius aliquantum conuerto, audacius non putem. Ita enim me uersari ipse scriptor, qui animum non plane adeo exposuit, iubet

Nunc de quibus haereticis loquatur s. IGNATIVS, erit dispiciendum, et quae nam sint euangelii illa uerba, quae isti deesse uolunt, uidendum. Facit utrumque sequens, ad Smyrnenses, epistola clarum, quae de Docetis, eo tempore, in Asia cum primis, caput efferentibus, sermonem esse demonstrat. Quibus confutatis copiose, piis auctor est uir sanctus,

---

auctor est ] Epist. ad Smyrn. ibid. p. XXXVII

DISSERTATIO XXXXIII

ctus, ut animum ad discendum promtum, ad oracula prophetarum, euangelium speciatim, quod exantlatas a CHRISTO pro hominibus molestias describat curate, eumque in uitam reuertisse, argumentis euincat claris, adferre uelint. *Ego quidem, inquit, noui optimum seruatorem, etiam postea quam a morte se vindicauisset, carne fuisse induitum uere, et profecto credo.* Quum enim PETRO, et qui cum ipso essent, uidendum se praebaret: *sumite, inquit contrectate me, et uidete,*

*prophetarum]* Ἐξαρέτως δὲ τῷ ἐναγγελίῳ ἐν φῶ  
τὸ παθος ἀντὶ διδόντων, καὶ ἡ ἀνάστος ἀντὶ<sup>τ</sup>  
τετελεσθαι, ibid. p. XXXVII. Non ad uerbum  
haec conuerto. Suspicor nihil minus, *consummatum esse IESVM CHRISTVM*, quum in  
uitam rediret, uoluisse scriptorem dicere: Eo  
enim ad felicitatem summan, et perfectam est  
euectus. Hoc sensu uox Graeca, in epistola  
ad Ebraeos, legitur

*sumite]* Δάσσετε, Φυλαφίσατε με, καὶ ὕδετε, δέτε γέ  
ἴμηι δαιμόνιον ὑπόμενον, ibid. pag. XXXV. *Dæ-  
monium, hoc est, spiritus.* HIERONYMVS in  
catalogo. u. IGNATIVS esse haec uerba ex Eu-  
angelio Nazaraeorum testatur. ORIGENES fu-  
isse eadem in libro, qui doctrina PETRI prae-  
scribitur, docet, Proem. L. I. de Princip. Haec  
*Dæmonii* uox occasionem dedit IGNATIO  
δαιμονίς; adpellandi *Docetas*, id quod ab impu-  
ro *Spiritu agitatos*, eo loco, non notat; uerum

### XXXXIII DE LIBRIS APOCRYPHIS

*dete, quod spiritus non sim, qui corpus non habet.* Respondent haec uerba euangelii Nazaraeorum Ebraei examissim illis optimi seruatoris, a s. LVCA litteris mandatis: *spiritus carnem, et ossa non habet,*

PRO-

homines, qui IESVM CHRISTVM Daemonium esse, hoc est, *spiritum, qui corpus non habeat;* putarent. Animaduertam hic in narr. Sacrum erudit. LE MOYNE locum. Persuaderet sibi uir doctus, fuisse ab IGNATIO laudatum hunc locum, ad confutandum nascientem, eo tempore, *Docetarum errorem, euangelio Nazaraeorum insertum.* Et fallor, uel, ad nascens illud falsum dogma euertendum adsutum fuit id, quod legebatur in euangelio Nazaraeorum, se non esse Daemonium incorpore, in nott. ad POLYCARPVM T.II. p. CCCCXV. Haec coniectura causam haereticis addiceret, quam impugnatam ab IGNATIO uidimus, queri, enim iuste adeo potuissent, locum, quo aduersum ipsos utebatur, esse euangelio temere adiectum. Operam dedi, ut quid in errorem coniecerit bonum uirum diuinando adsequerer, uideorque mihi, in *interpolata S. IGNATII ad Smyrnenses epistola,* quam solam, ut uidetur, euoluit, eam reperisse. Hac inductus potissimum causa, quod inserta illi S. LVCAE C. XXIII. u. XXXVIII. uerba: *spiritus carnem et ossa non habet rel. videam, quae in epistola non interpolata desunt.* Extremus uero locus facit, ut usui iam non sit prior. u. ep. ad. Smyrn. non. interpolat. S. III. p. m. XXXV. et ep. interpol. §. III. p. m. LXXXVIII. S. LVCAE ] C. XXIII. u. XXXVIII

DISSERTATIO XXXXV

*prout me conspicitis habere.* Haec ea sunt, nisi me omnia fallunt, uerba, quae, aduersus Docetas, in medium profert s. IGNATIVS. Existare ea in euangelio credituros se esse negabant, nisi in antiquis inuenissent exemplis, aut in iis, ex quibus reliqua manarint. S. IGNATIVS, in suis exemplis, scriptum esse adsfirmat Contra illi, uerum id esse, sed quia *praeiaceat*, contendunt, *Quae quum, merae contradicendi libidine*, et obfirmato animo, proferri s. uir uideret, tempus iis confutandis insumere, operaे pretium non putat, satisque habet dixisse: ego quidem ad antiqua exempla nulla, et *ἀρχέτυπα* me recipiam, quam ad IESV CHRISTI crucem, mortem, redditumque in uitam, et fidem, quam ille docuit Dignum martyre uerbum, fideique plenum, et pietatis, at dignum non mi-

nus

*praeiaceat*] ὅτι πεόνεται. Ita uerti uerba putem de-  
bere

*docuit*] *Fides*, hoc loco, si quid uideo, est doctrina, a IESV CHRISTO proposita, quae caussa ualere omnino aduersus Docetas debet. Quod si persuasionem modo aliquam dicere S. IGNATIO uoluisset, quin inepte esset loquutus, dubium non uidetur

## XXXXVI DE LIBRIS APOCRYPHIS

nus homine sano. Nihil enim cruce, morte, et redditu IESV CHRISTI in uitam, illustrius probat, euangelium non fuisse eo loco, de quo disquiritur, depravatum. Neque enim adfigi cruci *spiritus a corporis coniunctione secretus*, et liber, mori, et redire in uitam potest, nec uisa tantum modo, quaecumque de CHRISTO narrantur, eius generis fuisse; sed re uera ita accidisse, euangelium docet

Vnum restat dicendum. s. IGNATIVS scilicet, dum hunc adfert locum, *ἀγετίαν* euangeli Ebraei Nazaraeorum, grauissimo testimonio, confirmat, aliqui enim, disceptans cum haereticis, usus eo non fuisset. Quod dum obseruamus, pondus etiam accedit PAPIAE, apud EVSEBIVM testanti, s. MATTHAEVM euangelium Ebraeo prodiisse sermone, et fuisse illud deinceps a uariis conuersum. Laudata ab IGNATIO uerba erant in MATTHAEI uersione illa, quae in Asia habebatur, et in primo euangeli illius exemplo, quod adseruabant Nazarei; in nostris desiderantur. Et hoc

---

EVSEBIVM] H. E. L. III. C. XXXVIII

ruce,  
itam,  
fuisse  
raua-  
iritus  
liber,  
ec ui-  
CHRI-  
sed  
et  
TIVS  
uGe-  
rum,  
alio-  
ticis,  
a ob-  
PA-  
AT-  
diffe-  
ariis  
uer-  
quae  
nge-  
bant  
Et  
hoc

hoc ipsum est, quo inducti *Docetae*, non credituros se prius adfirmarent, fuisse haec uerba in euangelio, quam in exemplis ea primis offendissent. *Doce-  
tae*, fortassis eo s. MATTHAEI euangelio, quod manibus uersamus, nitebantur; *IGNATIVS* contra utebatur euangelio Nazaraeorum

## X

*Thesis quarta.* *Apocrypha vetera ua-  
rii erant generis, et numero multo, quam  
credi uulgo solet, pauciora.* Duabus haec propositio constat partibus: demonstra-  
bimus posteriorem, primo loco

Quod ineptum, nec satis sibi constans pietatis studium euangeliorum falso-  
rum pariter, et haeresium numerum adauxerit, ignoror: illud exploratum habeo, multo esse illum, quam autu-  
mant plerique, minorem. Qui am-  
plum texuit apocryphorum euangelio-  
rum indicem, doctissimus FABRICIVS, L.  
me-

*meminit ] u. Notitiam, et fragmenta euangeliorum  
apocryphorum, in cod. apocryph. N. T. FABRICII  
T. I. p. CCCXXXV, et ss.*

## XXXXVIII DE LIBRIS APOCRYPHIS

meminit quidem; uerum plures titulos interdum unum tantum scriptum designare, profitetur. Ita nimurum CERYNTHI, et CARPOCRATIS *euangelia* memorari uideas, quae Ebraeum s. MATTHAEI sunt euangelium, ab his, ut fertur, aliquantum immutata. *Euangelia XII. apostolorum*, secundum Ebraeos, secundum Nazaraeos, secundum Syros, secundum Ebionitas, euangelium sunt Ebraeum, s. MATTHAEO tributum, quorum exempla paullum modo discrepabant. *Euangelium s. BARNABAE* itidem est s. MATTHAEI euangelium, quod cum s. BARNABAE corpore, cuius impositum fuerat pectori, repertum, ZENONE imperante, in Cypro insula narratur. Pari ratione, uenitatum s. BARTHOLOMAEI *euangelium*, euangelium est s. MATTHAEI. *Euangelium*

*memorari uideas]* Ὁ μὲν γὰρ Κύενθος, ἡ Καρποκράτης τῷ αὐτῷ λεγόμενῳ --- τῷ τοῦ Ματθαῖον. EPI-

PHANIVS haeres. XXX. XVII

*discrepabant]* negari id non posse, docet IO. MILIVS, Prolegg. ad N. T. n. CCLXXI. LXXII. Verum talia narrationum ueritati non oberant. u. exempla e. l.

S. BARTHOLOMAEI] u. GRABIVM Spicileg. T. I.  
p. CXXVIII

## DISSERTATIO XXXXVIII

lium s. PETRI unum s. MARCI euangelium  
 haberi debet, quod scriptorum ueterum  
 non nullorum indicio, dictante s. PETRO,  
 MARCVS, eius discipulus, et interpres,  
 excepit; alterum scriptum est, saeculo  
 demum secundo medio, ut deinceps ui-  
 debimus. Quae de euangelio PAVLLI  
 comminiscuntur aliqui, aut non satis  
 perceptis iis, quae de euangelio suo,  
 hoc est ea doctrina, quam profitebatur,  
 loco quodam, apostolus habet, tribui  
 debent; aut nata, e sanctorum patrum  
 quorundam loquendi ratione, possunt  
 uideri, qui epistolas sancti uiri, eius.  
 euangelium adpellarunt. Eodem nomi-  
 ne s. LVCAE euangelium laudari noui-  
 mus, quoniam is a s. PAVLLO illud acce-  
 pisse crederetur. Euangelium s. ANDREAE  
 numquam exstitit, uideturque inde na-  
 D tum,

- S. MARCI] HIERONYMVS, in catalogo, u. PE-  
 TRVS. TERTULLIANVS, aduersus MAR-  
 CIONEM, L. IIII. C. V  
 euangelio suo] I. TIM. II. u. VIII  
 patrum quorundam] u. FABRICIVM c. I. T. I  
 p. CCCLXXIII  
 S. LVCAE] u. EVSEBIVM, H. E. L. III. C. III  
 p. LXXIII

## L DE LIBRIS APOCRYPHIS

tum, quod cum *aetis*, et *periodis* huius apostoli confusum fuerit. *Enratitarum euangelium* est quatuor euangeliorum, in unum corpus redactorum a TATIANO, harmonia. *Falsa HESYCHII, et LVCIANI euangelia* iactantur, alia de caussa nulla, quam, quod a uiris his doctis, exacta ad Graeca exempla, et emendata euangelia essent, eodem instituto, quo, in LXX interpretum uersione, iidem fuerant uerlati. MARCIONIS, et APELLIS euangelia s. LVCAE sunt euangelium, quod corrupisse, aliquibus in locis, uterque perhibetur. BASILIDIS *euangelium* commentatorius erat in euangelia scriptus, summum eorum exemplum quoddam, quod cum

iis

---

S. MATTHAEI] Ex mente FABRICII, et aliorum. u. c. l. p. CCCXXXXI

HESYCHII et LVCIANI] GELASIVS in *De cret.* Dist. XV. C. III

BASILIDIS] Alia sentit MILLIVS prolegg. n. CCLXIII. CCLXV. Suppositum a BASILIDE euangelium circa annum CXXIII; a VALENTINO circa annum CXXVII. sibi persuadet Mihi quidem potior uidetur FABRICII sententia

commentarius] u. EVSEBIVM H. E. L. IIII. C. VII  
CLEMEN. ALEX. Strom. L. IIII. p. DVI. *Aet.*  
*disput. Arthel.* in fine



iis non exacte conueniret, quae omnium  
manibus uersabantur. *Euangelium VA-*  
*LETINI*, siue *Valentinianorum* non com-  
pletebatur IESV CHRISTI historiam; ue-  
rum doctrinae horum hominum sy-  
stema, quod *euangelii ueritatis* nomine  
praescripserant. Consignatum a Gnosticis  
perfectionis *euangelium*, falsam eorum sci-  
entiam continebat, eratque adeo eadem  
illius ratio. Nec *euangelii SIMONIS*, et *Si-*  
*monianorum* fuitalia, cuius meminit auctor  
praefationis collectionis *Arabicae canonum*  
concilii Nicaeni. Docet is: *Simonianos sibi*  
*euangelium confinxisse, quod in quatuor tomos*  
*secantes, librum quatuor angulorum, et cardि-*  
*num mundi adpellarunt.* Quo referre de-

D. II be-

VALENTINI ] Siquidem in tantum processerunt  
audaciae, ut quod ab his non olim conscriptum est,  
ueritatis *euangelium* titulent, in nihil conueni-  
ens cum apostolorum *euangelitis*. IRENAEVS L.  
III. C. XI. u. et TERTULLIANVM aduer, baer.  
C. XXXVIII

perfectionis *euangelium*] EPIPHANIUS baeresi  
XXVI. II

Docet is ] u. concilia LABBEI T. II. col.  
CCCCLXXXVI

LII DE LIERIS APOCRYPHIS

beam IVDAE quoddam euangelium, quod Cainitarum se<sup>t</sup>ae s. EPIPHANIUS tribuit, nescio: illud tamen ex iis, quae s. pater adfert, intellectu haud est admodum difficile, magis inibi tractationem de mysteriis quibusdam, quae IVDAE prohibentur reuelata, quam falsam de IESV CHRISTO narrationem institui. Idem de euangelio PHILIPPI censendum est, quod a Gnosticis profectum, s. EPIPHANIUS autumat. E fragmento enim, ab eo conservato, adparet satis, fuisse illud doctrinae, quam a PHILIPPO traditam uolebant, compendium

Eodem pacto, aliorum etiam scriptorum apocryphorum, apostoli cuiusdam nomine insignitorum, numerus excrueuit. Habentur s. PETRI doctrina, pra-

---

IVDAE quoddam euangelium] Ωντει τη συνταγματική πόστοι ή Φίλειον εγγένειον οὐρανος ἀντρώποι εναγγελίων της Ιερουαλασσον. EPIPHANIUS, haeret XXXVIII  
n. I. pag. CCLXXVI

EPIPHANIUS] haeret XXVI. §. XIII. pag.  
LXXXV

doctrina] διδαχή

dicatio, iudicium, uariae tantum modo,  
 ut uidetur, unius libri adpellationes  
 CERYNTHI apocalypsis s. IOANNI supposita,  
 duaeque praeterea aliae eidem auctori  
 tributae, memorantur, CAII, docto-  
 ris Romani indicio, ab EVSEBIO laudati;  
 uerum admodum est credibile, CAIVM  
 de s. IOANNIS apocalypsi, quam a CERYN-  
 THO scriptam sibi persuadebat, loquu-  
 tum fuisse. Id quod obseruauit iam erudi-  
 tissimus GRABIVS. Bonam itaque apocry-  
 phorum partem, euangeliorum specia-  
 tim, de quibus in primis hic agitur, reiici  
 commode posse, adparet. Reliqua in  
 duos dispescemus ordines. Antiquio-  
 rum unum, et eorum, in quibus nihil,  
 praeter adcurationem, iure, desidera-  
 tur, recentiorum alterum, ad haere-  
 ses stabiendas tantum modo confi-  
 ctorum

---



---

*praedicatio*] παρακλησις

*iudicium*] κρίσις

*adpellationes*] GRABIVS Spicil. T. I. p. LVI

EVSEBIO] H. E. L. III. C. XXVIII

GRABIVS] c. l. p. CCCXII

Primum prioris ordinis locum, suo  
merito, tenent euangelia duo, siue de IE-  
SV CHRISTI doctrina, et gestis rebus nar-  
rationes, primae utrumque antiquitatis  
Antiquissimum, quantum ego quidem  
perspicio, euangelium est secundum Ebraeos,  
quod consignatum ab ipso MATHAEO  
uolebant Nazaraei. Ad hunc modum  
incipit: *accidit HERODE iudeis imperante,*  
*ut baptizatum, in Iordane fluvio, IOANNES*  
*ueni-*

*Nazaraei*] Non disquiram, hoc loco, Graecene  
scriptum sit S. MATTHAEI euangelium, an  
Ebraice. Adeant lectores ad doctissimi FA-  
BRICII cod. apocryph. N. T. T. I. p. CCCLV auersa  
et CCCLVI, in nota, ubi de hoc argumento di-  
sputata, brevibus, exhibentur. Equidem non  
dubito, exstisit Ebraeum euangelium, apo-  
stolorum aetate, conscriptum, et S. MAT-  
THAEO tributum, siue quod consignatum  
ab ipso esset, siue ex iis, quae coram docuerat,  
compilatum. Posteriorem sententiam praefe-  
rendam priori duxerim. Etsi enim ponderis  
adeo magni PAPIAE auctoritas non uideatur:  
reiciendum tamen eius testimonium non, nisi  
circumscripte et caute, fuerit. Lege illud apud  
EVSEBIVM L. III. XXXVIII

*incipit*] 'Eys'ero, ἐν τοῖς γεγράψασιν, rel. ap.  
EPIPHAN. haeresi XXX, n. XIII, p.  
CXXXVIII

ueniret emendationis uitae baptismum  
Deerat igitur huic uolumini familiae  
IESV CHRISTI enumeratio, admirandae  
eius conceptionis, magorum, caedis Be-  
thlehemiticae, fugae in Aegyptum hi-  
storia, et pariter, ac MARCI euangelium,  
a IOANNIS, et IESV CHRISTI baptismo, et  
ab utriusque docendi munere deduce-  
batur. Ceterum e fragmentis, quae  
supersunt, uideri facile potest, nullam  
illud haeresin propalasse, historiamque  
optimi seruatoris, si a quibusdam di-  
fesseris circumstantiis, exacte satis, et  
fide bona, dedisse

In eodem adulterae historia, IOANNIS  
VIII. capite relata, legebatur. Quae  
quum in multis IOANNIS exemplis non  
reperiatur, suspiciati sunt non nulli, in  
IOANNIS eam euangelium, e Nazaraeo-  
rum euangeli, dimanasse. Id si uerum  
est, quid de Nazaraeorum euangeli  
senserint antiquiores, adparet. Contra  
ea, si ab initio in IOANNE reperta fuit  
D. IIII . . . . . narratio,

---

*nonnulli*] u. adnotata ab eruditissimo viro, IO. AL.  
FABRICIO c.l. p. CCCLVI. auersa, et ss.

## LVI DE LIBRIS APOCRYPHIS

narratio, illo etiam pacto, huius euangelii ueritas confirmaretur.

Antiquitatis eiusdem est euangelium secundum Aegyptios nuncupatum. Meminit eius ORIGENES, postquam laudatum subinde ab ALEXANDRINO CLEMENTE fuerat, et prius etiam, si quidem genuina esset CLEMENTIS ROMANI secunda epistola. TITVS BOSTRENSIS, in s. LVCAM commentario, quem in patrum bibliotheca habemus, euangelium Aegyptiorum referre inter ea uidetur, de quibus s. LVCAS, utpote ante suum editis, loquatur. Encratitis hoc libro, ad errorem suum propugnandum, utentibus

---

ORIGENES] *Prooem. in LVCAM*

ALEXANDRINO CLEMENTE] *Strom. L. III. p.*

*CCCCXXXXV. CCCLII. CCCLIII*

*epistola]* u. eam §. XII. p. m. CLXXXVIII

TITVS BOSTRENSIS] Τὸν μὲν καὶ Ἀἰγυπτίον

σιναϊτικόν τὴν τὸ γενεράμενον τῶν δόδοντα ιναγ-

γίλον ὁ συνηγένεψαντος ἴσπιχείρων. *Biblioth.*

*PP. MOREL. T. XIII. p. DCCII,* ad quem locum

ad quem locum u. I. E. GRABIVM *spicileg. T. I. p. XXXII*

*BOSTRENSIS* hunc TITI locum, ex ORIGI-

NE desumtum, adparebit contendenti ea, quae SI-

MONIVS *bif. crit. N. T. P. III. p. LXXXI*

*LXXXII, ex ORIGENE, adfert*

S. LVCAS] I. u. I

bus, tantum absfuit, ut sancti patres eius testimonia reiicienda plane putarent, ut interpretarentur illa tantum modo aliquanto commodius. Ex quo intellectu est facile, ne in suspicionem quidem uenisse librum fraudis, ab haereticis intentatae; uerum auctoritate aliqua praeditum fuisse. Mihi consideranti, eum a christianis in Aegypto hominibus receptum fuisse, uenit in mentem cogitare, esse eum ab *Essenis*, qui fidem IESV CHRISTO adhibuerint, conscriptum. Non enim ipsorum modo doctrina, multis in rebus, cum Christiana religione satis conspirabat; uerum sciatet hoc *euangelium* obscuris sententiis, similitudinibus, zenigmatibus, et

D. V allego-

*commodius*] u. COTELERII notam PP. ap. c. l. p.  
CLXXXVIII

*receptum fuisse*] Secundum Aegyptios, hoc est, *recep-*  
*ptum ab Aegyptiis, probatum, et lectum*; quemad-  
*modum euangelii secundum Ebraeos appellatio*  
*receptum illud, et probatum a Christianis ho-*  
*minibus, qui iudaicae superstitioni nuntium*  
*miserint, notat. Sentit mecum doctissimus FA-*  
*BRICIVS, laudatque selectas GODOFREDI*  
*OLEARII in MATTHAEVM obseruationes u.*  
*eum Cod. Apocryph. N. T. T. III. p. DXXVI*

*sententii*] EPIPHANIUS, baeresi LXXII, II

## LVIII DE LIBRIS APOCRYPHIS

allegoriis. Quas alii nationi tribuendas putant; ego potius *Effenorum* ingenio conuenire censuerim. Encratitarum haeresi fauit hoc euangelium, et quis *Effenos* continentiae studuisse, et abstinentiae ignorat? Vero itaque admodum simile uidetur, sectae iudaicae homines illius, quam nunquam optimus seruator reprehenderat, adiunxit se ei, et fuisse eum sequutos, delatos deinceps in Aegyptum, postea quam is obiisset mortem, historiam uitae, et doctrinae eius retulisse in litteras, quae in Aegypto prodita, *euangeliū secundum Aegyptios* est adpellata.

Antiquae hae narrationes etsi adcuratae satis non essent, perniciose tamen uideri magis non debent, quam libri alii, deperditi dudum, non ab impostoribus, aut captatoribus fabularum, uerum ab iis scripti, qui non edocti satis et apostoli essent, aut eorum discipuli, auctoritate ab illis donati. Eadem est librorum omnium, ante natas grauiores haereses, proditorum, ratio. A canone arcebantur, non eam ob causam, quod periculi res plena uideretur; sed quod haud

hau  
Per  
dicar  
ta,  
cert  
scip  
sign  
TRI  
ALE  
re e  
cula,  
finx  
hom  
liore  
dere  
rosa  
et ac  
die,  
pare  
text  
prop  
quo

S. P.  
LA

haud eiuscta satis esset eorum *adversaria*.  
Pertinet hoc s. PETRI *doctrina*, siue *prædicatio*, saepius a sanctis patribus laudata, et statim ab apostoli obitu, primo certe saeculo, a quibusdam s. PETRI discipulis, nobis quidem ignotis illis, consignata. Non eadem est omnia s. PETRI *apocalypseos ratio*, cuius CLEMENS ALEXANDRINVS meminit. Ab impostore ea, iis haud dissimili, qui *Sibyllina oracula*, aut TRISMEGISTI *Poëmandrum* confinxere, fuit importata. Futurus enim homo, ut uidetur, auctor iudeis ad meliorem redeundi frugem, quo persuaderet ipsis, diuinasse s. PETRVM Hierosolymarum ruinas, tam copiose eas, et adcurate persequitur, ut legenti hodie, quae ex eo refert LACTANTIUS, adpareat statim, hominem s. PETRI prætexto nomine, historiam dedisse, et prophetam esse mentitum. Ceterum, quoniam malus is liber non esset, legebatur

---

S. PETRI] Fragmenta collegit GRABIVS  
LACTANTIUS] *institut. diuin.* L. III. c. XXI  
u. etiam apud GRABIVM *spicileg.* T. I. p.  
LXVIII. LXXII. et ss. quaedam *apocalypseos*  
huius fragmenta

LX DE LIERIS APOCRYPHIS

batur quotannis, reuertente paschatos festo, in Palaestinae ecclesiis, et si PETRO eum non deberi nemo fere ignoraret. Ad alterum apocryphorum ordinem, libros referemus omnes, qui secundo demum saeculo, a morte iam apostolorum, eorumque, qui docentes ipsos audierant, prodiere. Eo enim tempore, per fractis semel a mentiendi libidine carceribus, efferebat caput illa haereticorum multitudo, quae CLEMENTIS ALEXADRINI indicio, HADRIANO regnante, ad ANTONINVM usque PIVM, impotentissime, et nouis ueluti furiis agitata, saeuuit. Ea aetate impostores immensum scriptorum subdititorum numerum, aliorum apostoli cuiusdam, aliorum discipuli eorum alicuius nomine insignitorum, prodebant. Suo quisque ingenio obsequutus, itinera, euentus, et doctrinam eorum, a quibus profecisse se gloriabatur, referebat. Haec illa tem-

pe-

---

*Legebatur*] SOZOMENVS H. E. L. VII. c. XVIII

*audierant*] Si uerum est, quod perhibetur passim, fuisse LEVCAM IOANNIS discipulum, eximendus ille, hoc loco, fuerit

pestas est, quae scripta tot, in ecclesiae praesens exitium, peperit, a sanctis patribus, haud sine indignatione, repudiata, et a IESV CHRISTI doctrina, omnibus modis, aliena

Confidenter hodie iactari hanc apocryphorum librorum multitudinem uidetas, postea quam maxima eorum pars periiit, neque iam, ut sumus ab eorum origine sane quam remoti, declarari satis potest, a quibus illi, quo pacto, et, quam ob causam, fuerint efficii. Exstiment multi se, nec iniuria, scripta auctoritatis certae, uniuersae ecclesiae perpetuo testimonio obsignata, pari loco habere cum iis posse, quae fabulis plena sunt, centumque circiter annis post ea scripta, et quae falsa esse adeo clarum uidetur, ut solis esse radii solent, quem sudum est. Nullius haec pretii uolumina, in tenebris concepta meris, contemtu excepta sunt, et indignatione grammaticorum, neque tractabantur ab aliis, praeterquam iis, qui aut haeresi suae praesidium inde inuenisse uidebantur, aut rerum omnium erant

erant ignari, superstitione mira homines, quibusque adeo fumum uendere facile erat. Adparebit hoc falsi s. PETRI euangelii exemplo, eo nomine ornati, ut nobilius aliquanto eius commatis aliis uideretur. Ignorabant illud uel Asiae ipsius, ubi natum erat, ecclesiae pariter ac praesules omnes, qui sub secundi saeculi finem floruerunt. Ex quo diuinari facile potest, medio demum hoc saeculo, in lucem illud fuisse editum

SERAPION Antiochiae praesul, qui circa annum domini CLXXXX floruit, quem *Rhoſſum* Ciliciae urbem concessisset, diuinas ibi ecclesiae de hoc euangelio sententias comperit, aliis, obstinato animo, illud et legere, et propugnare, instituentibus, aliis contra illud damnantibus, utpote apocryphum. Neque uerbum is antea de eo unum inaudierat, tantum abfuit, ut primariae hic in oriente ecclesiae praesul, ea, quae traduntur  
inibi

---

*euangelii exemplo*] Quod a LEVCA profectum sibi persuadet GRABIVS, *spicileg.* T. I. p. LVIII

SERAPION] EVSEBIVS H. E. L. VII. C. XII

inibi, habuerit perspecta. Quo minus illud legatur, quum sine damno id fieri sibi persuaderet, paci consulturus, non uetat. Edoctus deinceps in *Rhōssenium* ecclesia haereses, suffultas huic euangelio, doceri, euoluere illud cum cura, et reuocare sub examen, operaे pretium putat. At uero in nulla ecclesiarum, quae communem doctrinam seruabant, inuentum, repertum tandem apud *Dōcetas*, qui adsidue illud tractabant, mutuum sumit. Ex quo confici, nullo negotio, potest, obscurum hunc librum, nouum, et ecclesiae christianaе, eo tempore, ignotum plane, et in manibus modo sectae illius, quam aberrauisse a saniori doctrina intelligunt omnes, fuisse Huius commatis sunt falsae narrationes illae, quibus uti ueritatis diuinæ expertes homines, tanta contentione, hodie solent, ad conuellendam librorum apostolicorum *ἀνθετιαν*, quos recepit, et est ue-

---

*repertum*] Ἐδυνέθημεν γάρ τοις αὐλαῖς τῶν ἀσκη-  
στῶντοι αὐτὸς τὸ ἐναγγέλιον - - - οὐς Δοκῆτας  
καλέμεν - - - κεροσθενεῖς τοις αὐτῶν διελθεῖς  
EVSEBIUS H. E. L. VII. C. XII. p. CCXIII  
CCXIII

## LXIII DE LIBRIS APOCRYPHIS

uenerata omnis, ab initio, ecclesia. Fieri non poterat, ut eiusmodi nugis imponeatur cuiquam, quum distingui facile, eo tempore, quo prodibant, possent, nisi commodis suis seruientes homines, et praeiudicatis abrepti opinionibus, fraudatorum insidiis passi fuissent se, nec inuitos, occupari

## XII

Thesis quinta. *Tantum abest, ut apocryphi libri omnes, cuius tandem cumque ordinis sint, pessimi etiam, et maxime deprauati, vim inferre diuinae IESV CHRISTI auctoritati, religionique, eius innixa doctrinae, possint, ut pariter, ac ii, de quorum auctoritate nemo dubitat, ad eam confirmandam, possint traduci*

Ad demonstrandam hanc thesin sufficerit indicasse, libros hos omnes, ueritates primarias duas confirmare, unam, esse IESVM CHRISTVM DEI filium, utcumque haec uerba interpretentur uarii, alteram, eumdem, quod a DEO missus sit, testatum rebus mirandis, illustribus maxime, et in luce publica gestis, fecisse, toties

tieri  
po-  
cile,  
ent,  
nes,  
us,  
nec  
  
apo-  
um-  
e de-  
STI  
tri-  
au-  
zan-  
  
suf-  
ue-  
am,  
um-  
, al-  
sit,  
ma-  
sse,  
ties

toties utramque, a nostrae fidei hostibus, impetitam. Praecepta enim IESV CHRISTI, ex parte certe, in philosophorum etiam libris tradita, sanctosque eius ad homines sermones, in quibus sapientiam summam admiramus, non sunt illi, confidimus, moraturi. Nec magis impetro a me, ut credam, pulcritudinem eos, et grauitatem characteris, moreisque IESV CHRISTI in primis sublimes esse arrosuros. Miracula igitur patruiisse IESVM, rediisse eum in uitam, et eueratum deinceps in caelum fuisse, per negandum illi in primis putant, rerum que adeo tot hominum probatae maxime fidei, et in quos ne suspicio quidem fraudis ulla, aut erroris cadit, testimoniis in euangeliis confirmatam ueritatem, libris apocryphis, quae prima saecula peperere, adlatis, sustinent in dubium reuocare. Quo quidem ausu efficerent aliquid, si falsae illae narrationes, iis in rebus, aduersum quas tanto molmine se efferunt, contrariam ueris sententiam tuerentur. Ex iis enim, qui, eodem ferme tempore, animum ad scribendum adpulerunt, quoties rem acci-

E

disse

## LXXVI DE LIBRIS APOCRYPHIS

disse alii tradunt, alii negant, alii denique eam silentio praetermittunt: toties in ambiguo ea, paribus ab utraque parte argumentis, relinquitur. Quanto magis eamdem rem adserentibus multis, qui ceteroquin sane sunt diuersi, sententiarum diuertia confirmare illa debent uideri, quae eodem ore, de iis rebus, de quibus instituitur quaestio, differuerunt. Quid igitur ad retundendum hominum a fide alienorum argumentum ualere grauius potest, quam illud ipsum, quod miraculis insignem IESVM fuisse, et rediisse in uitam, libri apocryphi pariter, et illi, quorum in confesso est *auðentia*, confirmant

I. Christiana, e iudeis, ecclesia in sectas abiit duas. *Nazaraeorum* unam, *Ebionitarum* alteram, legis utramque tenacissimam, quae persuadebant sibi IESVM CHRISTVM eo, quod s. SPIRITVS, qui descenderat in eum baptizatum, cum ipso erat, quoniam MESSIAS esset, et imperio potens, euectusque tandem in caelum, esse DEI filium. De concepcione IESV CHRISTI, eiusque nascendi ratione admiranda, idem utraque non sen-

sentiebat. Euangelio se tuebantur Ebraeo, in non nullis rebus fortassis diuerso. Latinam *Nazaraeorum euangelii* uersionem adornauit s. HIERONYMVS, quae in collegio s. BENEDICTI *Cantabrigiae*, et in *Parisiensi* Regia bibliotheca hodienum, si fides haberuiri eruditis, nostrae aetatis aliquibus, debeat, adseruatur. Quo modo cumque se res habeat, testatur s. EVSEBIVS, relatum hoc euangelium a non nullis in scriptorum certorum ordinem, saltim eodem loco cum epistolis s. IACOBI, et IVDAE habitu fuisse. In illo igitur euangelio facta admiranda, redditus speciatim optimi seruatoris in uitam, quem ad modum

E. II

haec

*adseruatur*] Laudat diligentissimus I. A FABRICIUS DRVSII, e praeter. in N. T. p XXX, hunc locum: *Siunt exstante MS. Cantabrigiae, in biblioteca collegii S. BENEDICTI, et SANDIVM nucl. hist. eccl. p. V, e PHIL. LABBEI bibliotheca noua MSS, esse euangelium Nazaraeorum Parisiis, in bibliotheca regia.* At addit acutiss. FABRICIVS: *sed ego non credulus illis. c. l. T. I p. CCCLXX*

*EVSEBIVS*] "Ἡδη δέ ἐν τέτοις ( ὥμολογεμένοις) τί-  
χεσ ἡ τὸ κρῆτος Ἐρετίας εὐαγγελίοις κριτέλεσσον, αὶ  
μάλιστα Ἐρετίοις ἢ τὸν Χριστὸν παραδεῖσμενον, χαι-  
ρεῖσσον, EVSEBIVS H.E.L III.XXV.p.LXXXVII

## LXXVIII DE LIBRIS APOCRYPHIS

haec s. MATTHAEVS tradit, enumerantur, ut ex iis liquidum esse potest, quae s. IGNATIVS adfert, s. HIERONYMI indicio, e *Nazaraeorum* euangelio desumpta. Ex quo adparet, ecclesiam, e iudeis collectam, a ceteris hominibus christianis, ferme ab apostolorum obitu, separatam, rediisse IESVM CHRISTVM in uitam, et quod exinde consequitur, missum eum a DEO esse, et miraculis illud maximis demonstrasse, non persuasisse sibi solum, uerum libris sacris etiam fecisse testatum.

II. Eiusdem antiquitatis est *euangelium secundum Aegyptios*, christianorum hominum in Aegypto fidei ueluti norma, quo *Encratitae* utebantur, quo primarius illius sectae homo, IVLIVS CASSIANVS nitebatur, quo Sabelliani speciem errori suo conciliari posse credebant, quod laudabant Valentiniani, et citatum a scriptore epistolae s. CLEMENTIS secundae uidimus. Non reiecerunt ss. patres

---

S. IGNATIVS] Epist. ad Smyrn. p. m. XXXV. v.  
bif. MAN. et Man. cr. p. CCCCLI

tres huius euangelii testimonia, id quod fecissent procul dubio, nisi pariter, ac euangelia, quorum indubia erat *aut ev-*  
*teria*, missum IESVM CHRISTVM fuisse, il-  
ludque eum miraculis, et suo in uitam  
reditu, reddidisse credibile, traditum  
inibi inuenissent. Illud praeter ea dico,  
*Encratitas* non magis, quam *Sabellianos*,  
illo uti commode, nisi suae ipsi caussae  
consultum male uellent, non potuisse,  
si quidem illud in principibus fidei ca-  
pitibus, eadem cum reliquis non ex-  
hibuisset

III. *Euangelium* habemus *nativitatis*  
*MARIAE*, *protoeuangelium* *S. IACOBI*, *euangelia*  
*infantiae* duo, et *NICODEMI* unum. Ne-  
que enim eius commatis alia exstare  
iam memini. Euangelia haec omnia,  
ut fabulis sint referta plurimis, uera ta-  
men etiam confirmant, quoniam eorum  
scriptores, quae suo instituto conuenire  
essent uisa, inde decerpserint, ornaui-  
sentque deinceps, poëtarum ad modum,  
qui historiam aliquam episodiis, euen-  
tibusque uariis, admiratione dignis,

E. III

quae

LXXX DE LIBRIS APOCRYPHIS

quae aut ingenium suggestisset ipsis, aut a rumore tantum, et scriptoribus, auctoritatis nullius, essent edicti, distinguunt.

III. Principio statim sectae nascebantur duae, sententiis plane contrariis, *Ebionitarum* una, qui IESVM CHRISTVM esse uerum MESSIAM, seu regem Iudaeae genti promissum, adserebant quidem; uerum hominem modo eum esse sibi persuadebant: *Docetarum* altera, de qua supra disserui. Illi quum adsequi cogitatione non possent, quo pacto uerbum diuinum ita cum humana iunginatura posset, ut utriusque una esset persona, inducebant sibi in animum, optimum seruatorem corporis humani tantum modo speciem quamdam, et formam adsumsisse. Florebant duae haec sectae in Asia, s. IGNATII tempore, qui, in epistolis suis, eas confutavit. Vtraque finxitse subdole libros, et corrupisse creditur. Homiliae Clementinae saeculi secundi *Ebionitae* tribui solent Probe suam fabulam egit, quisquis earum scriptor est, christianus philosophus, qui suas de sanctiori disciplina

fen-

aut  
au-  
stin-  
pan-  
rii,  
RVM  
dai-  
qui-  
esse  
de  
qui-  
uer-  
na-  
per-  
oti-  
an-  
for-  
nae  
ui,  
ue  
sse  
he-  
ent  
ea-  
so-  
na-  
en-

sententias s. PETRI, aut s. CLEMENTIS nomine incrustauit. Adtuli LEVCAE *Docetae*, haerefeosque eius hominum aliorum, fragmenta, a ss. patribus nobis conseruata. Verum perlegat mihi aliquis, quidquid sectarum tam contrariarum reliquum habemus, certauerimque, pignore quoquis posito, ubique ueritatem illam, esse IESVM CHRISTVM DEI filium, proponi. *Docetae* quidem illud communioni naturae tribuebant, *genitus est* a patre: *Ebionitae* contra adoptione, ob summas uirtutes, et s. SPIRITVS in ipso praesentia, tales esse contendebant. Vbiique IESVM CHRISTVM doctrinae suae, admirandis, et in luce publica gestis rebus, fidem facere offendes. Ebionitis, et qui cum illis faciunt aliis, dubium numquam fuit, mortuum esse IESVM CHRISTVM, et ex morte deinceps reuocatum. Ex aduerso Docetae, quae illi accidisse uere uolebant, adparuisse modo, et uisa eiusmodi fuisse, disputabant. At uero rem euenisce ipsam,

E. IIII utri-

---

*Ebionitis] Conf. bistoriam MANETIS, et Manichaeorum criticam, L. II. C. IIII. principio*

## LXXXII DE LIBRIS APOCRYPHIS

utrique non infitiabantur. Ebionitae in suo euangelio legebant, dixisse IESVM CHRISTVM S. PETRO, *iisque, qui cum illo erant, hoc est discipulis reliquis: contra-ctate me, intelligite, quod non sim spiritus a corporis coniunctione liber.* Docetae in libris aliis, nescio quibus, scriptum inueniebant, s. IOANNEM, quum tangere optimum seruatorem uellet, immersisse manum adparenti eius corpori, et penetrauisse illud, carne plane non obniente. Tam distractae, ex una parte, hae narrationes, in rei tamen summa conueniunt, IESVM CHRISTVM scilicet, uitae redditum, a discipulis suis fuisse uisum, postquam mortem antea obierat, siue uere talem, siue eam tantum, quae mor-

---

legebant] c.1. p. CCCCLI

inueniebant] Fertur in traditionibus, quoniam IOANNES euangelista ipsum corpus CHRISTI, quod erat exfrinsecus tangens, manum suam in profundum misit, et ei duritia carnis nullo modo reluctata est, sed locum manui praebuit. CLEM. ALEX. Commentar. in I. Io. I. u. I. u. COTELERIVM notis ad IGNATII epist. ad Smyrn. p. m. XXXV XXXVI, et FABRICIVM c. I. T. III, p. DCIII DCIII

mortis speciem haberet, cognouisse eos  
DOMINVM, et habuisse cum ipso ser-  
mones

V. MARCIAN proxime ab apostolorum  
aetate absfuit, uixitque eodem, quo pri-  
mi eorum discipuli, tempore. Euan-  
gelio utebatur s. LVCAE. Adnotauit  
uarietates aliquas TERTULLIANVS, et ad-  
curatione etiam maiori, s. EPIPHANIUS,  
ex quibus constare potest, quibus illud  
in locis a nostro discreparit. Quae ta-  
men omnia tanti non fuere ponderis, ut  
de IESV CHRISTI factis mirandis relata,  
non in exemplis pariter haereticorum  
legerentur, ac puriori fidei addictorum  
hominum

## XIII

Inquirenti igitur, quibus rebus euangeli-  
gia primi saeculi apocrypha, a ueris  
diuersa essent, adparebit, uarie tantum  
modo uitiae IESV CHRISTI aliquas parti-  
culas, uerba eius, et sententias enarrari,  
omittique subinde in euangeliis nostris

E. V scri-

EPIPHANIUS ] haereti XXXXII VIDET

## LXXXIII DE LIBRIS APOCRYPHIS

scripta, ac adiici aliquoties etiam alia  
Eiusmodi est optimi seruatoris illud:  
*Felicius est dare, quam accipere, quod in*  
libro, qui *doctrina apostolorum* praescribitur,  
existare, refert EVTHALIVS.  
Plures seruatoris sententias, a S. BARNA-  
BA, seu insignitae eius nomine epistolae  
scriptore, CLEMENTE ROMANO, in po-  
steriori, quam ei tribuunt epistola, a IV-  
STINO MARTYRE, IRAENEO, aliis lauda-  
tas, collegit doctissimus FABRICIVS.  
Illae  
aut e libris inter christianos receptis de-  
sum-

---

illud] Actor. XX. u. XXXV

*doctrina apostolorum*] Διδαχὴ, οὐελ διδαχὴ τῶν ἀπο-  
στόλων. EVSEBIUS H. E. L. III. C. XXV. u.  
TVRRIANI praefationem ad constitutiones apo-  
stolicas, apud FABRICIVM c.l.T.I.p.CCCXXIII  
COTELERIVS ad L. HH. c. III. fuisse, qui con-  
stitutiones S. PAVLUVM adpellare sibi per-  
suadeant, quod ab apostolis uere illae profe-  
ctae crederentur, animaduerit, et ita EV-  
THALIVM, a TVRRIANO citatum, habere  
monet. Verum bellissime FABRICIVS in  
EVTHALIO, pro διατάξεως, substituit Διδαχὴ<sup>η</sup>  
neque uero sensit EVTHALIVS, PAVLUVM  
uel LVCAM ex CLEMENTI tributis constitu-  
tionibus dictum illud petuisse, quo nihil absurdius  
dicere potuisset, sed ex διδαχῇ sine traditionibus  
apostolorum, in constitutionum opus deinde ut cum-  
que collectis c. l. p. DXXIII  
FABRICIVS] c. l. T. I. CCCXXI. et seq.

alia  
ud:  
d in  
rae-  
LIVS  
NA-  
olae  
po-  
n IV-  
nda-  
llae  
de-  
um-  
duo-  
7. u.  
apo-  
XIII  
con-  
per-  
rofe-  
EV-  
bere-  
S in  
VM  
titu-  
rdius  
zibus  
cum-  
sumtae, aut conseruatae, traditione,  
erant. Quibus originem debent etiam  
aliquam multa, euangeliis, a librariis,  
inserta, resecta deinceps a s. HIERONYMO,  
eo tempore, quo, ad antiquissimos codi-  
ces, exempla, quae tum erant, exegit

## XIII

Quae quum ita sint, si immorari ho-  
minibus a fide alienis nihilo secius argu-  
mentis suis libeat, et praese ferre, office-  
re apocrypha, librorum noui foederis  
auctoritati: in procliui est, non posse  
eos fidem historiae ulli habere, quoniam  
narrationes conflictas circumferri no-  
runt plurimas. At uero quem ad mo-  
dum legibus uti certis, ad distinguendas  
narrationes falsas, aueris possumus, ne-  
que spuriis umquam eos, qui certae sunt  
auctoritatis, conuulsum iri credimus:  
ita, quantum video, fatendum etiam  
illis fuerit, maximam librorum noui foe-  
deris partem, indubiis notis, a suppositi-  
tiis, posse dignosci. Referri huc debet i  
testimonium ecclesiae, inde ab eo tem-  
pore,

## LXXXVI DE LIBRIS APOCRYPHIS

pore, quo primum prodierunt. II. Testimonium sectarum omnium, quae licet absurdissimas saepe sententias propugnarunt, facta tamen miranda, relata in euangeliis, non negant, librosque adeo ipsos, quibus illa describuntur, ueros esse confirmant. Quo loco tamen historia conceptionis, et nativitatis IESV CHRISTI, quem JOSEPHI alii filium crediderunt, MARIAE alii esse negarunt, est exigenda. III. Caussam adferri nullam posse, ne probabilem quidem, qua inductus, inficiari quisquam queat, deberi iis euangelia, quibus ab ecclesia tribuuntur. Neque certe adulterunt eam Manichaei, quamuis sententiam amplecterentur contraria. Quid quod alia potius sanctioris doctrinae capita, quam IESV CHRISTI miracula, quibus missum se a DEO esse, declaravit, impetierunt. III. Exactis praeter ea euangeliis ad criticae leges maxime feueras, ne uolam quidem; aut uestigium suppositionis quisquam, credimus, animaduertet. Configat enim aliquis s. MATTHAEI capita priora duo, quoniam in euangelio Ebraeorum, quod a MATTHAEO

THAEO profectum ipso, christiani, e iudaica religione, credebant, non essent, configat LVCAE capita priora duo, et, quae tertio exhibetur, familiae IESV CHRI-STI enumerationem, quae in MARCIONIS exemplis non habebantur, similique de caussa, priores euangelii s. IOANNIS uer-sus: non impedit tamen haec, quo minus illi libri a MATTHAEO, LVCA, et IOANNE, quibus eos ecclesia tribuit, aut a quibus ea potius illa accepit, debeant profecta uideri. v. Reuocatis sub exa-men iisdem libris, una cum reliquis no-uis foederis omnibus, quos ecclesia uni-versa recepit, nihil erit, quod persuade-re possit, fuisse eos, post excidium de-mum Hierosolymarum, consignatos, neque adeo post apostolorum, apostolico-rumque uirorum, quorum nominibus praescribuntur, e uita discessum. De IOANNIS quidem euangelio tradi alia ui-demus; uerum in euangelio illo nihil pla-ne est, quod confirmare eam opinionem possit. vi. Mortem obiisse optimum seruatorem, rediisse in uitam pariter, et eius doctrina in s. PAVLLI epistolis reperi-tur

Te  
e li-  
pu-  
ta in  
deo  
eros  
isto-  
HRI-  
ide-  
exi-  
osse,  
s, in-  
nge-  
que  
am-  
tra-  
do-  
mira-  
ara-  
eter  
ime  
esti-  
nus,  
is s.  
iam  
IAT-  
AEAO

## LXXXVIII DE LIBRIS APOCYPHIS

tur. Quis est uero, apud quem in suspicione modo uenire eorum *auθετία* possit, si ab ea, quae Ebraeis inscripta est, discedas, quam tamen, ante euersas Hierosolymas, consignatam esse, quisquis eius tandem auctor sit, est in aprico. Neque uidetur intellectu ex ea difficile, quaenam fuerit, illo tempore, ecclesiae christianaे doctrina. Ponam se etiam aliquam iudaicae superstitioni addiectiorem aliquanto, noluisse PAVLLI de lege MOSIS sententiam amplecti, at quae umquam fuit, quae missum esse IESVM CHRISTVM mirandis rebus admirabilem, rediisse in uitam, et euectum in caelos esse, falso iactare apostolum, fuerit opinata? Illud enim, ad unum omnes, testantur, ii pariter, qui doctrinam uniuersae complectuntur ecclesiae; et ii, qui peculiaribus se addixere opinionibus, christiani homines e iudeis collecti, ac paganis. Libri quorum certa est auctoritas in eo conspirant; neque in alia abeunt apocryphi Vno ore omnes ea confirmant, aduersus quae ueritatis expertes homines, tanto molimine, se solent efferre

## XV

Prius quam dissertationem finiam, respondendum erit argumento adhuc uni Recepit scilicet in occidente ecclesia, ut hoc exemplo in rem praesentem utar, in canonicorum librorum numerum, libros incertos non nullos, et de quorum *aut* *evangelia* constare illi magis non potuit, quam ss. patribus, qui, quo propius ab apostolorum aetate aberant, eo rectius de librorum origine, eorumque scriptoribus poterant iudicare. Pertinent huc s. IOANNIS apocalypsis, posterior s. PETRI epistola, s. IACOBI, s. IVDAE, s. IOANNIS secunda, et tertia. Non conferam huc, quae pro auctoritate horum scriptorum iam sunt ab aliis disputata. Faciam tamen in extrema pagina clarum, quo pa-

cto

---

*clarum*] Operae scilicet pretium fuerit, discipere, quo pacto liber auctoritatis dubiae, EVSEBII aetate, reputatus, in canonicorum deinceps numerum potuerit referri. Constitisse ecclesiae de eius *ab* *evangelia*, noua quadam *reuelatione*, ut credam, non possum a me impetrare. Quae enim causa probabilis saltim adferri queat, *reuelationis* serius demum factae sunt. Nec placet

## LXXXX DE LIBRIS APOCRYPHIS

Eto in canonem eos relatos ego mihi persuadeam. Illud dixisse satis habeo, quod honori esse nostris euangeliis potest, redditque eorum fidem certam magis, et indubitatem, ad superstitionem fuisse ad-  
cura-

mihi illud magis, procedente tempore, exse-  
ruiisse se diuinae auctoritatis quedam argumen-  
ta, quibus peruidendis non sufficerint antiquio-  
res. Indicis praeter ea, quibus a dubiis libris  
posse canonicos distingui, sanctioris disciplinae  
antistites, tantum non omnes, contendunt,  
minime me adfici fateor, et futurum umquam  
dubito, ut uera esse in animum inducam, quae  
de piorum hominum sagacitate ueluti aliqua,  
alii alucinantur. Illius enim quum expromi-  
ratio idonea uix posse uideatur, prope ab en-  
thusiasmi abest ea, credo, suspicione. Quibus  
rebus inductus, ita argumenta subduco, et hanc  
facio cogitationum summam, libros dubios,  
antiquissimis temporibus, uisos, recitatos pri-  
mum in ecclesiis esse pluribus, quod utili-  
tate forent commendabiles, et ad incendendos  
animos adpositae scripti. Constatre haec EV-  
SEBII indicio possunt. Καὶ τὸν ἀντιδευτέρῳ  
μὲν (γεγραπτό) οὐ μητὸς δὲ εἰ πλείσταις ἐκκλησίαις  
παρὰ πολλοῖς διδηματερεψαν. H. E. L. III. XXXI  
p. CIII. Vnde in canonorum librorum  
ordinem sensim sunt adscripti. Hoc modo,  
ut exemplo rem declaremus, ecclesiastes legeba-  
tur tantum, principio, mox est canoni ad-  
iectus. Nec uideri alia N. F. librorum non  
nul-

DISSERTATIO LXXXI

curatam primam ecclesiam, longe certe ea, quae deinceps successit, in inferendis canoni libris, adcuratiorem. Vnum adiicio, quod, etsi probaturus nemo sit temere hominum a fide alienorum de libris, quos nominaui supra, arcendis a

F

ca-

nullorum ratio debet, qui etsi dubii essent, utiles tamen cognitu habebantur. πολλῶς χρήσιμος φυλέσσω. EVSEBIVS H. E. L. III. III Praelegebantur in ecclesiis, subiectebantur libris reliquis, et ecclesiae tandem, a qua non probari non poterant, iudicio, in canonem adserebantur. Faciam adnotacioni meae finem, ubi MARCI ANTONII DE DOMINIS locum adleuero, ita ille de rep. eccles. L. VII. C. I. §. XVIII: Ideo non possum probare, si quis dicat, praeter testimonium ecclesiae, requiri etiam internum SPIRITVS SANCTI testimonium, et alias coniecturas maiestatis, puritatis, consonantiae rel. ad hoc, ut canonici libri perfecte cognoscantur, et ecclesiam per haec etiam procedere, ante quam reddat testimonium: non possum, inquam, his adsentiri, quia iam nullus umquam esset finis diffensionum circa libros canicos; siquidem quisque SPIRITVM SANCTVM se habere prætendet, hic ad includendum in canone librum aliquem; ille ad excludendum. Reliqua

per-  
quod  
red-  
s, et  
ead-  
cura-  
  
exse-  
umen-  
tiquio-  
s libris  
disciplinae  
ndunt;  
inquam  
quae  
aliqua,  
spromi-  
ab en-  
Quibus  
et hanc  
dubios,  
os pri-  
utili-  
dendos  
ec EV-  
XIII  
Anno 1416  
XXI  
rorum  
modo,  
legeba-  
oni ad-  
n non  
nul-

LXXXII DE LIBRIS APOCRYPHIS

canone, consilium: non posse tamen  
eos omnino, utpote scrupulosiores ali-  
quanto, antiquitatis quippe fultos  
suffragio, condemnari.

EXPLICITA EST DE LIBRIS  
APOCRYPHIS DISSERTATIO



ZA

ZACHAR· PEARCE· PRAEFAT·  
AD· LONGINVM· HEPI· ΥΠΟΥΡΓΟΥ  
P· XX· ED· AMSTEL· REC.

VELIM· INTERPRETEM· FIDVM· ESSE· SED  
NON· SVI· OSTENTATOREM· SIT· MODO  
EIVS· DICTIO· LATINA· SINT· VERBA· SEN-  
SVM· GRÆCI· AVCTORIS· CLARE· BREVI-  
TERQUE· EXPRIMENTIA· NON· QVAERO  
AN· VERSIO· ORNATVM· PRAE· SE· FERAT  
NEQVE· ENIM· LEGENDA· SED· CONSULEN-  
DA· EST· ILLA· VT· DE· VI· GRAECORVM  
VERBORVM· IGNARIS· PRAESENTI· SIT· AV-  
XILIO· DE· HIS· HIC· VERSIONIBVS· LATINIS  
INTELLIGI· VELIM· QVAE· VNA· CVM  
GRAECO· AVCTORIS· TEXTV· IMPRIMVN-  
TVR· DE· CETERIS· ENIM· SEORSIM· EDITIS  
QUALIS· EST· GALICA· ILLA· CELEBERRI-  
MI· BOILEAVII· VERSIO· ALITER· SE· RES  
HABET· IN· HIS· ORNATVM· ET· ELEGAN-  
TIAM· QVAERIMVS· IN· HIS· SENSVM· MA-  
GIS· QVAM· VERBA· PARIA· PARIBVS· RE-  
SPONDENTIA· SPECTAMVS· NEC· POSSIT  
ILLE· INTERPRES· OMNINO· PLACERE· QVI  
NON

ZA

NON PROVT EIVS LINGVAE QVA<sup>3</sup> VT  
TVR POSTVLAT RATIO ALIQLA IM  
MVTAT CORRIPIT DILATAT VT IPSAM  
VIM SPIRITVMQVE AVCTORIS OB OCY  
LOS LEGENTIVM PONAT

---

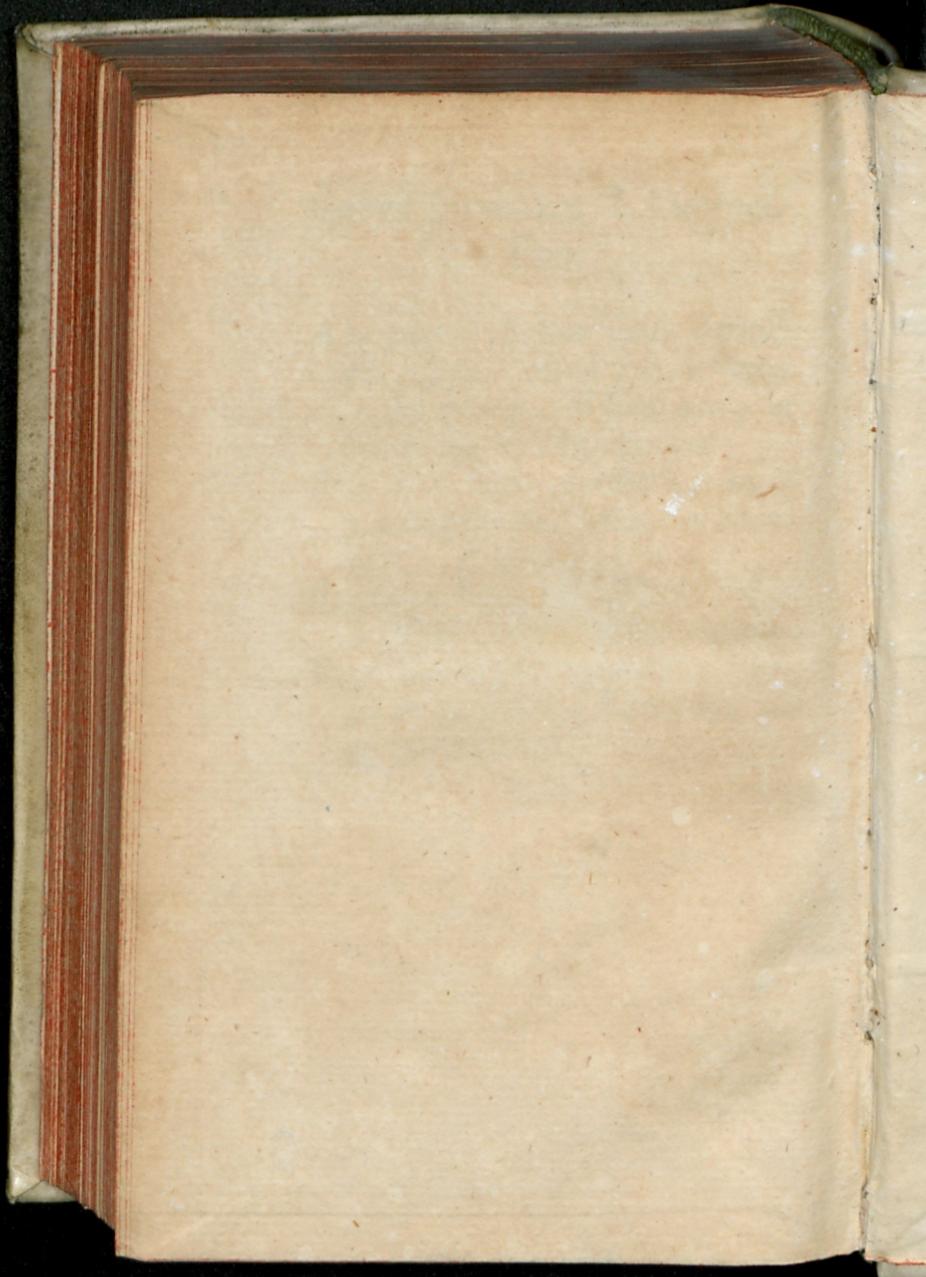
BEROLINI

---

LITTERIS IOAN GODOFR  
MICHAELIS



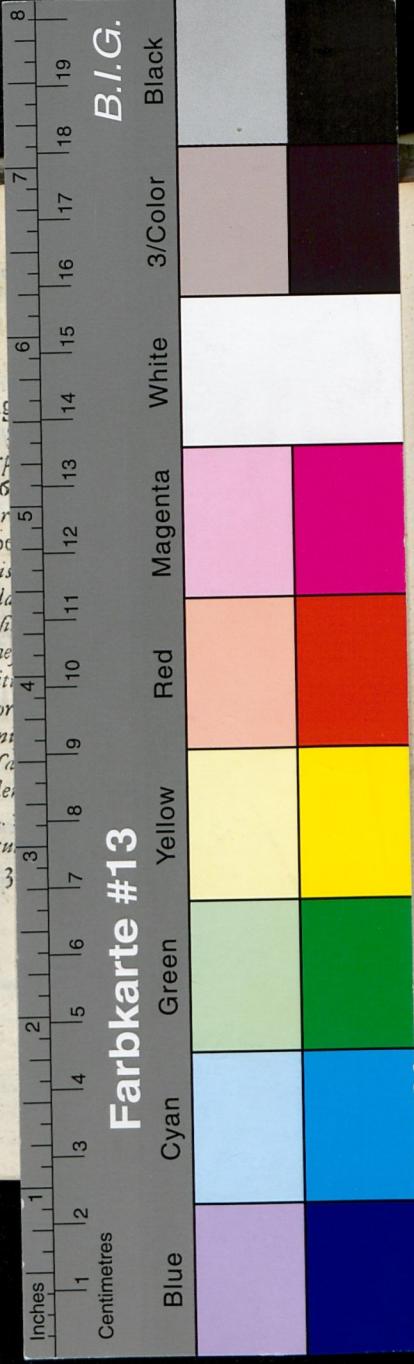




40 —  
h, 14

(x225 8414)

R  
DE  
T



ISAACI DE BEAVSOBRE  
V. C.  
DE  
NOVI FOEDERIS  
**LIBRIS APOCRYPHIS**  
DISSERTATIO  
LATINAM E GALICA FECIT  
ET  
SVMME REVERENDO  
AMPLISSIMO AC DOCTISSIMO  
VIRO  
**SIGISMVNDO IACOB O**  
**BAVMGARTEN**  
DEMANDATVM IPSI HAVD ITA  
PRIDEM SACRAS LITTERAS DO  
CENDI PUBLICE IN HALEN  
SI ACADEMIA MVNVS  
GRATVLATVRVS  
NVNCVPAVIT  
**FRIDER GVIEL ROLOFFIVS**  
BEROLINAS  
**BEROLINI**  
APVD CHRISTOPH GOTTL NICOLAI  
15CCXXXIII